संस्कृति की सीता की वापसी

संस्कृति की सीता की वापसी

संकलन-सम्पादन
ब्रह्मवर्चस

प्रकाशक
श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)
गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
(उत्तराखण्ड) 249411

द्वितीय आवृत्ति सन् 2010 मूल्य-: 10:00 रुपये

पूर्व निवेदन

यह पुस्तिका युगऋषि (युग निर्माण आन्दोलन के प्रणेता) वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा सन् १९८७ में दिये गये एक प्रवचन से सम्पादित की गई है। यह प्रवचन उन्होंने परिव्राजकों (युग निर्माण योजना के समयदानी प्रचारकों) के प्रशिक्षण के बाद उन्हें क्षेत्र में भेजने की तैयारी के क्रम में दिया था।

युगऋषि भी स्वामी विवेकानन्द तथा योगी श्री अरविन्द की तरह भारत द्वारा विश्व के सांस्कृतिक आध्यात्मिक नेतृत्व को दैवी योजना का अंग मानते रहे हैं। भारत और विश्व में जो विसंगतियाँ, समस्याएँ विकट रूप में दिखाई देती हैं, उन सबके पीछे मुख्य कारण है मनुष्य का सांस्कृतिक पतन। उनका स्पष्ट मत यह रहा है कि जिस तरह भारतवासी राजनैतिक दासता की जंजीरों में जकड़े थे, उसी तरह अपसंस्कृति के अनगढ़ पूर्वाग्रहों के बन्धनों से भी बँधे हैं। राजनैतिक निर्णय करने के, अधिकार पाने के लिए जिस प्रकार राजनैतिक क्रान्ति की गई, उसी तरह मनुष्य को श्रेष्ठ मनुष्य बनाने वाले सांस्कृतिक आदर्शों के सदुपयोग का अधिकार पाने के लिए, वह क्षमता हासिल करने के लिए संस्कृति क्रान्ति की अनिवार्य आवश्यकता वे बतलाते रहे हैं।

इस प्रवचन में उन्होंने अलंकारिक ढंग से अनगढ़ रूढ़िवादी पूर्वाग्रहों में बँधी संस्कृति की उपमा रावण की कैद में रह रही सीता से करते हुए उसकी वापसी की बात कही है।

रावण एक विकृत मानसिकता का प्रतीक है। रावण सप्तऋषियों में से एक महर्षि पुलत्स्य का पौत्र और कुबेर के पिता ऋषि विश्रवा का पुत्र था। लेकिन वह अपनी अहंता, अपनी सुविधा, अपनी सम्पत्ति के नशे में अपने उस महान गौरवमय सांस्कृतिक स्वरूप को भूल गया। आज का मनुष्य भी अपनी ऋषियों, अवतारों, पीर-पैगम्बरों की विरासत को भूलकर अपनी इन अनगढ़ महत्त्वाकांक्षाओं को ही सब कुछ मानकर चल रहा है। इन अनगढ़

अंधी महत्त्वाकांक्षाओं से मुक्ति मिले, तो सारी वसुधा को अपना कुटुम्ब (वसुधैव कुटुम्बकम्) तथा सभी प्राणियों को अपना आत्मीय (आत्मवत् सर्वभूतेषु) की गरिमामय जीवन शैली फिर से विकसित हो। ऐसी ही सांस्कृतिक क्रान्ति को देशव्यापी और विश्वव्यापी बनाने की जरूरत को युगऋषि ने संस्कृति की सीता की वापसी का अलंकारिक सम्बोधन दिया है।

उसके लिए उन्होंने ऐसे सांस्कृतिक योद्धाओं, वीरों का आवाहन किया है, जो सांस्कृतिक सुगढ़ता की बात केवल वाणी से ही नहीं, अपने आचरण से भी समझायें-फैलायें। उन्हें उन्होंने युगशिल्पी अथवा युगसैनिक कहा है। उनकी शुरुआत भर युग निर्माण परिवार या गायत्री परिवार नामक संगठन से की गई है। प्रत्यक्ष में तो उन्होंने उन्हीं को सम्बोधित किया है, किन्तु वे इस बात पर जोर देते रहे हैं कि ऐसे युगशिल्पी समाज के सभी वर्गों-सभी संगठनों के द्वारा तैयार किए जाने चाहिए। उनके कार्यक्रम तथा कार्य करने के ढंग अलग-अलग हो सकते हैं, किन्तु उनका लक्ष्य एक ही होगा, 'मनुष्यता को अपसंस्कृति की अनगढ़ता से मुक्त कराकर उसे संस्कृति की सुगढ़ता, गरिमा से अलंकृत करना'।

गायत्री मंत्र को वे सद्विचार सद्भाव जागरण के सूत्र तथा यज्ञ को सत्कर्मों के अभ्यास क्रम के रूप में प्रस्तुत करते रहे हैं। अन्तःकरण में सद्विचारों, सद्भावों का जागरण है 'गायत्री' तथा कर्म में परमार्थ लोकमंगल का अभ्यास है 'यज्ञ'। विभिन्न संगठन अपने-अपने ढंग से इन दोनों क्रान्तिकारी प्रक्रियाओं को अपने अनुरूप आकार-प्रकार दे सकते हैं।

आशा-अपेक्षा की जाती है कि युगऋषि के दर्द और मार्गदर्शन को आत्मसात् करके भावनाशील विवेकशील तथा सत्साहस के धनी सभी वर्गों के जीवन्त भाई-बहिन संस्कृति के पुनर्जागरण-पुनर्स्थापना के अभियान में सक्रिय रूप से भागीदार बनेंगे।

-प्रकाशक

संस्कृति की गुहार

संस्कृति रही कराह, न मेरा रूप बिगाड़ो रे।
अगर मनुजता को सँवारना, मुझे निखारो रे॥
ऋषियों को सादा जीवन ही, जीना था भाया।
विश्ववन्द्य ऊँचे विचार से, भारत कहलाया॥
मन अपना प्रत्यक्ष देवता, उसे निखारो रे॥
संस्कृति रही कराह, न मेरा रूप बिगाड़ो रे।
ऋषि दधीचि ने जीवन देकर, इसकी शान रखी।
उसे बचाने बिके हरिश्चन्द्र, शैव्या साथ बिकी॥
भोगवाद के चक्कर में मत, उसे बिसारो रे॥
संस्कृति रही कराह, न मेरा रूप बिगाड़ो रे।
इसे सँवारा अनुसुइया ने, कुन्ती मीरा ने।
शंकर, ज्ञानेश्वर, नानक, चैतन्य, कबीरा ने॥
भेदभाव से ऊँच-नीच से, इसे उबारो रे॥
संस्कृति रही कराह, न मेरा रूप बिगाड़ो रे।
संस्कृति बची अगर तो मानवता बच जाएगी।
यदि न बची तो मानव में पशुता आ जाएगी।
क्या पशुता स्वीकार विश्व को, तनिक विचारो रे।
संस्कृति रही कराह, न मेरा रूप बिगाड़ो रे।
युगऋषि ने आवाज लगाई जागो युग शिल्पी।
संस्कृति रक्षा का आन्दोलन बने विश्व व्यापी॥
देवोपम संस्कृति से युग का, रूप निखारो रे॥
संस्कृति रही कराह, न मेरा रूप बिगाड़ो रे।

संस्कृति की सीता की वापसी

सीता का हुआ अपहरण

मित्रो! संस्कृति की सीता का रावण ने अपहरण कर लिया था, तब भगवान् रामचन्द्र जी राक्षसों समेत रावण को मारकर सीता को वापस लाने में सफल हुए थे। इतिहास की वह पुनरावृत्ति फिर से होनी है। मध्यकाल में हमारी संस्कृति की सीता को वनवास हो गया। साम्प्रदायिकता इस कदर फैली, मत-मतान्तर इस कदर फैले, बाबाजीयों ने अपने-अपने नाम के इतने मजहब इस कदर खड़े कर लिए कि हिन्दू समाज का एक रूप ही नहीं रहा। संस्कृति के साथ में अनाचार शामिल हो गया। बुद्ध के जमाने में ऐसा भयंकर समय था कि हमारी संस्कृति उपहास का कारण बन गयी थी। घिनौने उद्देश्यों को संस्कृति के साथ में शामिल कर दिया गया था। पाँच काम बड़े घिनौने माने जाते हैं और इन पाँचों कामों को भी धर्म के साथ जोड़ दिया गया था और संस्कृति को कलंकित कर दिया गया था। ये पाँचों हैं—"मद्यं मांसं तथा मत्स्यो मुद्रा मैथुनमेव च। पञ्चतत्त्वमिदं देवि! निर्वाण मुक्ति हेतवे॥" ये पाँचों घिनौने काम संस्कृति के साथ शामिल हो गये।

और मित्रो! यज्ञ का रूप कैसा घिनौना हो गया था? आपको मालूम नहीं है, तब मनुष्यों को मारकर होम दिया जाता था घोड़ों और गौओं तक को होम दिया जाता था। वह क्या था? वह संस्कृति का वनवास काल था और अब क्या हो गया? अब बेटे, संस्कृति की सीता रावण के मुँह में (अपसंस्कृति के कब्जे में) चली गयी, जहाँ बेचारी की जान निकल जाने की उम्मीद है और जहाँ से वापस आने का ढंग दिखाई नहीं पड़ता। सीता राक्षसों के मुँह में से कैसे निकलेगी? चारों ओर समुद्र घिरा हुआ है। उस (मूढ़ मान्यताओं अनगढ़ परम्पराओं रूपी) समुद्र को कौन पार करेगा? रावण कितना जबरदस्त है? राक्षस (मनुष्य में व्याप्त आसुरी प्रवृत्तियाँ) कितने जबरदस्त हैं? इनसे लोहा

कौन लेगा? संस्कृति की सीता को वापस लाने का काम कठिन मालूम पड़ता है। अब वह कहाँ चली गयी? वह तो मध्यकालीन युग था। उसमें आस्तिकता फिर भी थी। उस समय किसी कदर आस्तिकता का नामनिशान तो था। राम-रहीम का जिक्र तो आता था। यज्ञ की कोई बात तो कहता था। धर्म का कोई नाम तो भी लेता था।

नास्तिकों का आज का युग

लेकिन मित्रो! आज हम लंका के जमाने में रह रहे हैं, जहाँ कि धर्म को अफीम की गोली कहा जा रहा है। पढ़े-लिखे लोगों में जाइये और उनसे जानिए कि धर्म क्या है? तो वे यही कहेंगे कि धर्म माने अफीम की गोली, जिसको खाकर के आदमी मदहोश हो जाता है। कर्त्तव्यों को भूल जाता है। समझदार लोगों में, बुद्धिजीवी वर्ग में संस्कृति के लिए यही शब्द इस्तेमाल होता है-अफीम की गोली।

भगवान् के बारे में दार्शनिक नीत्से (पश्चिम का एक दार्शनिक) का एक वचन मुझे बार-बार याद आ जाता है और खटकता भी रहता है। नीत्से यों कहते थे कि खुदा मर गया और मरे हुए खुदा को हमने इतने नीचे दफन कर दिया है कि अब उसके दोबारा जिंदा होने की कोई उम्मीद नहीं है। नास्तिक नीत्से कहता था जो कुछ खुदा के नाम पर दुनिया में पाया जाता है, वह केवल बहम है और हम इस बहम को दुनिया से मिटाकर छोड़ेंगे।

साथियो! नीत्से तो अब नहीं रहा, लेकिन उसका काम, उसकी फिलॉसफी का काम साइंस ने अपने कंधे पर उठा लिया। साइंस ने कहा कि परमात्मा की अब कोई आवश्यकता नहीं है और धर्म की कोई जरूरत नहीं है। डार्विन ने कहा कि अगर आप धर्म के मामले में दखल देंगे, तो आदमी को मानसिक बीमारियाँ हो जायेंगी। मनोविज्ञानी फ्रायड ने कहा कि ये बहन है, ये बेटी है और इसके साथ-साथ में ब्रह्मचर्य है और यह आपका पतिव्रत धर्म है; अगर इस तरह की बेकार की बातें

फैला देंगे, तो आदमी के दिमाग में कॉम्पलेक्स पैदा हो जायेंगे और आदमी को मानसिक बीमारी हो जायेगी। आदमी को उच्छृंखल रहने दीजिए, स्वेच्छाचार करने दीजिए। जैसे कि जानवरों में स्वेच्छाचार होता है, वैसे ही आदमी को भी स्वेच्छाचार का मौका मिलना चाहिए।

इनसानी जीवन तबाह हो जाएगा

मित्रो! अभी मैं आपसे विज्ञान की बातें कह रहा था, नास्तिकतावादी दर्शन की बात कह रहा था, यह सब आपको तो मालूम नहीं है। आप तो हमारे सम्पर्क में रहे हैं, उनके सम्पर्क में थोड़े ही रहे हैं। आप उनके संपर्क में रहे होते, तो जिस बात का हवाला मैं अभी दे रहा था, इसको बढ़ा-चढ़ाकर आप कहते और आपका मखौल उड़ाया जाता। आज बेटे हमारी संस्कृति का अपहरण हो रहा है। अब उसको वापस लाने के लिए क्या करना पड़ेगा? अगर संस्कृति वापस न आ सकी, तो दुनिया तहस-नहस हो जायेगी, दुनिया मिट जायेगी। दुनिया जिन्दा न रह सकेगी।

परलोक खराब हो जायेगा, स्वर्ग नहीं मिलेगा, मुक्ति नहीं मिलेगी? बेटे इन बेकार की बातों को जाने दीजिए। स्वर्ग की, मुक्ति की, परलोक की, चमत्कार की बातें मैं नहीं कहता, मैं तो इनसानी जीवन की बात कहता हूँ। इस संसार की बात कहता हूँ। अगर हमारी संस्कृति और धर्म-जिसको हम आस्तिकता कहते हैं, जिन्दा नहीं रही, तो दुनिया तबाह हो जायेगी। हमारे गृहस्थ जीवन का सफाया हो जायेगा। पारिवारिक जीवन ऐसे खत्म हो जायेगा, जैसे कि जानवरों में खत्म हो गया है। उसका कोई कुटुम्ब होता है? कोई कुटुम्ब नहीं होता। कोई औरत होती है? कोई नहीं होती। कोई बाप होता है? कोई नहीं होता। जानवर अकेला होता है।

मित्रो! इसी तरीके से इनसान को क्या करना पड़ेगा? जानवरों के तरीके से अकेले रहना पड़ेगा। और औरत क्या होती है? अरे साहब! उसे कहते हैं, जिसके साथ शादी होती है। शादी किसे कहते हैं?

(पशुओं के लिए तो) मौसम को शादी कहते हैं। एक साल एक बीबी से शादी की, अगले साल उसे भगा दिया। दूसरे साल दूसरी शादी कर ली। तब आप कितने साल तक जवान रहेंगे। हम पचास साल तक जवान रहेंगे और कोशिश करेंगे कि पचास औरतें आ जायें। हर साल एक नयी आ जाय और दूसरी चली जाय। बेटे, यूरोप में यही हो रहा है। अब स्त्रियाँ भी इसी तरह करेंगी। जो बातें मर्दों पर लागू होती हैं, वही बातें औरतों पर भी लागू होती हैं। कोई दाम्पत्य जीवन नहीं है। यह महीने, दो महीने पीछे बदल सकता है। आज शादी-ब्याह हुआ है। कल तक यह चलेगी कि नहीं, इसकी कोई गारण्टी नहीं है। आज सारे यूरोप में यही हो रहा है।

पारिवारिक जीवन नीरस–तहस-नहस

आज गृहस्थ जीवन में क्या हो रहा है? माँ-बाप किसे कहते हैं? माँ-बाप उसे कहते हैं, जब तक कि लड़का नाबालिग रहता है और जब तक वह जिसके सहारे रहता है, उसका नाम होता है—माँ-बाप! जब वह बड़ा हो जाता है तब? तब माँ-बाप का बेटे से कोई ताल्लुक नहीं है और बेटे का माँ-बाप से कोई ताल्लुक नहीं है। जानवरों में जब तक बच्चा छोटा होता है, उसकी माँ उसका ध्यान रखती है और जब बच्चा बड़ा हो जाता है, तो सींग मार देती है। नहीं साहब! बड़े बच्चे से भी मोहब्बत होनी चाहिए। क्यों? बड़े बच्चे से क्यों होनी चाहिए? छोटे बच्चे को तो नेचर चाहती है कि उसका कोई गार्जियन होना चाहिए। नेचर के दबाव से क्या चिड़िया, क्या मेढक, क्या औरत, क्या मर्द-सब दबाव मानते हैं और जैसे ही बच्चा बड़ा हुआ, मोहब्बत खत्म हो जाती है और बच्चे भाग जाते हैं और माँ-बाप भी भाग जाते हैं। आज यही हो रहा है।

मित्रो! आप संस्कृति को खत्म कर रहे हैं, या करना चाहते हैं? संस्कृति खत्म होगी, तो हमारा पारिवारिक जीवन तहस-नहस हो जायेगा। अगर हमारा आज का बुद्धिवाद जिन्दा रहेगा और हमारा अर्थशास्त्र

जिन्दा रहेगा, तो फिर क्या होगा? अर्थशास्त्र के हिसाब से हमने, आपने हरेक ने स्वीकार कर लिया है कि बुड्ढे बैल को कसाई के यहाँ जाना चाहिए, क्योंकि बुड्ढे बैल को रोटी नहीं खिलाई जा सकती। दुनिया के निन्यानवे फीसदी जानवर कसाई के यहाँ चले जाते हैं। दूध देने वाले हों, चाहे हल में चलने वाले हों, दोनों का अन्त क्या होगा? भाई साहब! दोनों का अन्त कसाई के यहाँ होगा। नहीं साहब! खूँटे पर बाँध कर खिला दीजिए। नहीं, खूँटे पर बाँधकर खिलाने से हमारी जगह घिरेगी और चारा खराब होगा। फिर नये जानवर हम कहाँ से पालेंगे? इनको हम भूसा कहाँ से खिलायेंगे? इनकी एक ही रेमिडी है कि इन बुड्ढे जानवरों को-चाहे वे गाय हों, चाहे वे बैल हों, दोनों को ही कसाई के यहाँ जाना चाहिए। आजकल बिलकुल यही हो रहा है। बूढ़े होने पर निन्यानवे फीसदी जानवर कसाई के यहाँ जाते हैं। एक प्रतिशत अपनी मौत मरते हों, तो बात अलग है।

संस्कृति की अवज्ञा के दुष्परिणाम

मित्रो अगले दिनों क्या होगा? अगले दिनों ऐसा ही बुद्धिवाद और अर्थशास्त्र हम पर लागू होगा। अर्थशास्त्र क्या कहेगा? अर्थशास्त्र यह कहेगा कि बुड्ढे बाप को कसाईखाने भेजना चाहिए। कसाईखाने? हाँ बेटे, इसके लिए कसाईखाने से अच्छी और कोई जगह नहीं हो सकती। यह जगह घेरता है, रोटी खाता है, घर में खाँसता रहता है, थूँकता है। बेकार परेशान करता है। बुड्ढा हो गया है, अक्ल खराब हो गयी है। घरवालों की नाक में दम करता है। इसलिए क्या करना चाहिए कि इसको सीधे कसाईखाने भेजना चाहिए। चाइना में यह प्रयोग हो रहा है। बुड्ढे आदमियों को ले जाते हैं कि चलिए हम आपको बूढ़ेखाने में रखेंगे। वहाँ बहुत आराम है। आप इस गाड़ी में बैठिये, फिर हम आपको ले जाते हैं। वहाँ ले जाते हैं और कहते हैं कि आप यहाँ भर्ती हो जाइये। देखिए कैसा अच्छा इन्तजाम है। अच्छा, आइए, बैठिए। दस-पाँच दिन

वहाँ रखा, फिर दूसरी जगह ले गये। एक इंजेक्शन लगा दिया। वह बुड्ढा कहाँ गया? उसका ट्रॉंसफर कर दिया गया है और अब वह दूसरे कैम्प में चला गया है। बच्चों ने पूछा—हमारा बुड्ढा कहाँ है? बुड्ढा जहन्नुम में चला गया।

अब क्या होना है? यही होना है। आप में से कोई बुड्ढा तो नहीं है? अच्छा अभी नहीं है, तो थोड़े दिनों बाद हो जायेंगे। यह क्या हो गया? जब संस्कृति की सीता चली गयी और वापस न आई, तो हरेक को इसके लिए तैयार रहना चाहिए। किसके लिए? या तो बेटा नीलाम करेगा कि यह बुड्ढा बिकाऊ है। कोई कसाई हो, तो ले जाय। अगर कोई नहीं लेगा, तो गवर्नमेण्ट खरीद लेगी और इसका राष्ट्रीयकरण करेगी। फिर बुड्ढे कहाँ जायेंगे?

तैयार हो जाइये, अब यही होगा। आप संस्कृति को खत्म कर रहे हैं? संस्कृति रावण के मुँह में चली जायेगी, तो क्या होगा? बिलकुल यही होगा, जो अभी बताया है। बेटे, अर्थशास्त्र हमको यही सिखाता है। इकोनॉमिक्स हमें यही सिखाती है कि जो बेकार चीजें हैं, वाहियात चीजें हैं, उनको नीलाम कर दीजिए, उनको हटा दीजिए या जला दीजिए। बेकार की चीज का हम क्या करेंगे? बुड्ढे आदमी का क्या होगा? उसकी हमें जरूरत नहीं है। माँ का क्या होगा? कसाईखाने जायेगी। बाप भी कसाईखाने जायेगा। बेटे, अगर हम संस्कृति को खत्म करते हैं, तब अगले दिनों यही होगा।

मित्रो! अगर संस्कृति खत्म होती है, तो अर्थशास्त्र, बुद्धिवाद, समाजशास्त्र, समाज शास्त्री—मान सकते हैं कि यह सारे के सारे भौतिक चिन्तन लोगों के सामने मुसीबतें पैदा करेंगे। गृहस्थ जीवन को, दाम्पत्य जीवन को खत्म करेंगे। बच्चों का भविष्य खत्म करेंगे। बच्चों का लगाव माँ-बाप के प्रति नहीं होगा। माँ-बाप का लगाव बच्चों के प्रति भी नहीं होगा। बुड्ढा अस्पताल में बीमार पड़ा है। छपे हुए कार्ड आते हैं, जैसे

ब्याह-शादी के कार्ड आते हैं। उस पर लिखा रहता है कि 'डियर फादर' आप बीमार हैं। नीचे छपा हुआ है-'सो एण्ड सो.....' आपकी बीमारी का समाचार जानकर हमको बहुत दुःख हुआ। भगवान् आपको जल्दी अच्छा करे। बस-'योर्स' और नीचे साइन कर दिया और पन्द्रह पैसे का टिकट चिपका दिया। कार्ड पर अस्पताल का, वार्ड का नम्बर डाल दिया।

बुड्ढा सारे मरीजों को कार्ड दिखाता है कि देखिए, हमारे बेटे की चिट्ठी आई है। देखिए, हमारे बेटे की बहुत सिम्पैथी है। हमारे लिए वह बहुत शुभकामना करता है। और आपका बेटा? हमारे बेटे की भी चिट्ठी आ गयी है। पच्चीस पैसे वाला कार्ड उसने भेजा है। और देखिए साहब? हमारे बेटे ने चालीस पैसे वाला कार्ड भेजा है। अच्छा, तो आपके बेटे की मोहब्बत ज्यादा है और आपके बेटे की कम है। कार्ड की कीमत से मोहब्बत आँकी जायेगी।

डरावनी अकेली होगी जिन्दगी

मित्रो! संस्कृति की सीता चली गयी, तो यही हो जायेगा। और क्या हो जायेगा? संस्कृति चली गयी और आदमी को मालदार बना गयी, खुशहाल बना दिया। हाँ साहब! हमें भी मालदार बना दीजिए। हाँ, हम भी आपको बहुत मालदार बना देंगे, आप निश्चिन्त रहिए। कितना मालदार बनायेंगे? बेटे, हम आपको बहुत मालदार बनाने वाले हैं। हम आपको इतना मालदार बनायेंगे, जितने कि अमेरिकन नागरिक हैं। ठीक है, अमेरिका मालदार देश है। वहाँ क्या हो रहा है? बेटे, सारे का सारा अमेरिका, जिसमें से अस्सी फीसदी नागरिकों की बात मैं कहता हूँ, टेंशन में बेतरह दुःखी हैं। टेंशन क्या होता है? तनाव को कहते हैं। तनाव किसे कहते हैं? तनाव उसे कहते हैं कि जब आदमी यह देखता है कि मैं अकेला हूँ। मेरा कोई नहीं और मैं किसी का नहीं हूँ। अपने को जब आदमी अकेला देखता है, तो उसे इतना भय लगता है। जिंदगी इतनी

नीरस और डरावनी हो जाती है। आप कोई परमहंस हों, तो मैं नहीं कह सकता, लेकिन सामान्य आदमी हैं, एकाकी हैं, अकले हैं, आप स्वार्थी हैं, तो आपकी जिन्दगी नरक हो जायेगी।

फिर क्या हो जायेगा? फिर आपके दिमाग पर इतना टेंशन रहेगा कि जिसकी वजह से आपकी नींद हराम हो जायेगी। अमेरिका के अधिकांश नागरिक रात को नींद की गोली खाकर के सोते हैं। काम करने के घण्टे तो किसी प्रकार से निकाल लेते हैं। आठ घण्टे ऑफिस में काम करना पड़ता है, सो वे उतना समय काट लेते हैं। फिर क्या करें? सारी जगह मरघट-सी जिन्दगी दिखाई पड़ती है और सारी दुनिया मरघट-सी दिखाई पड़ती है। इस मरघट में अब हम कहाँ जायें? इधर जायें तो इधर भी आग, उधर जायें, तो उधर भी आग। हर तरफ से जिन्दगी नीरस दिखाई पड़ती है। उस नीरस जिन्दगी में फिर कहाँ जाते हैं? बेटे, कहीं शराबखानों में चले जाते हैं, कहीं क्लबों में चले जाते हैं। कहीं कैबरे हाउस में चले जाते हैं। ये कैबरे हाउस क्या होते हैं? हम क्या बतायें, आप सब जानते हैं। उसमें औरतों को मर्यादा रहित करके नचाया जाता है।

भूत-प्रेतों की दानवीय संस्कृति होगी हावी

मित्रो! ये सारे के सारे लोग कौन हैं? ये कौन हैं? भूत। ये कौन हैं? प्रेत। ये कौन हैं? डाकू। ये कौन हैं? हत्यारे। सब नीरस, सारी की सारी दुनिया नीरस। आदमी मशीन के तरीके से भागता हुआ चला जा रहा है। अगले दिनों क्या हो जायेगा? यही हो जायेगा। जो आधुनिक संस्कृति के दीवानों में हो रहा है। आप देव संस्कृति का परित्याग करते चले जा रहे हैं, तो दानवीय संस्कृति आपको यही करेगी। वह आपको पैसा जरूर देगी और सुख-सुविधा के साधन देगी। लंका में ये सुख-सुविधा के साधन क्या कम थे? आप विश्वास रखिए, आपको भी ये सब मिल जायेंगे। विज्ञान जितनी तेजी से बढ़

रहा है और आर्थिक उन्नति के जो साधन चल रहे हैं। बिजली इस कदर पैदा हो रही है कि इससे आपको सुख-सुविधा के वे सभी साधन मिल जायेंगे, जो आप चाहते हैं। जो लंका में थे, वे आपको सब मिल जायेंगे, पर इससे क्या होगा? आप हैरान होंगे।

हम आपस में लड़-मर न जाएँ

और मित्रो क्या होगा? वह परिस्थितियाँ आ जायेंगी, जो यादवों के समय आ गयीं थीं। यादवों ने यादवों को खा लिया। यादवों को बाहर वालों ने नहीं मारा था। यादवों में गृहयुद्ध हुआ था और वे आपस में लड़कर मर गये थे। खानदान वाले खानदान वालों से ही लड़ मरे थे। तो क्या होने वाला है? बेटे, हम और आप आपस में लड़ेंगे और एक दूसरे को मारकर खा जायेंगे। आदमी एक दूसरे को दाँतों से चीर डालेगा।

ऐसा सम्भव है? हाँ बेटे, अभी थोड़ी कमी है। अभी हम दाँतों से नहीं चीरते हैं। अभी हम आपको अक्ल से चीरते हैं। हम कोशिश करते हैं कि अक्ल से आपको इस तरीके से चीरें, कि आपका सारा का सारा खून निकाल लें और आपको कोई बाहरी जख्म भी न होने पाये। अभी हममें इतनी भलमनसाहत और शराफत है। अभी हम आपका खून निकालना चाहते हैं, पर जख्म दिखाना नहीं चाहते; क्योंकि उससे हमारी निन्दा होगी, बदनामी होगी, लोगों को मालूम पड़ जायेगा। अभी मालूम नहीं पड़ने देना चाहते हैं कि हम आपका खून निकालना चाहते हैं, ताकि आप इतने कमजोर हो जाएँ कि आपको मारने का हमारा मकसद पूरा हो जाए। हम आपका मांस खाना और खून, पीना चाहते थे, वह मकसद हमारा पूरा हो गया है और आप जिन्दा भी बने रहे।

साथियो! अभी कुछ भलमनसाहत जिन्दा है, लेकिन अगर संस्कृति की सीता चली गयी, तो कल क्या होने वाला है, कह नहीं सकते। तब फिर आदमी को कोई ऐतराज नहीं होगा। अभी एक कुत्ते के मोहल्ले से दूसरा कुत्ता निकलता है। बिना वजह के उसने कुछ माँगा नहीं है, कुछ

उधार नहीं चाहिए, कुछ कर्ज नहीं चाहिए। उसका किसी से कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं है। कोई मुकदमेबाजी नहीं है। लेकिन उस गली से निकलते ही एक कुत्ता दूसरे कुत्ते को चीर डालता है। आप भी चीरेंगे। क्यों नहीं चीरेंगे? क्या हम किसी कुत्ते से कम हैं? जब कुत्ता कुत्ते को चीर सकता है, तब फिर आदमी-आदमी को क्यों नहीं चीरेगा? आदमी-आदमी को चीरना चाहिए। अगले दिन ऐसे आयेंगे।

गुरुजी! आप क्या बात कर रहे हैं? बेटे, मैं यह बात कह रहा हूँ कि संस्कृति, जो इनसान को इनसान बनाये हुए है। परलोक की बात मैं नहीं कहता, मुक्ति का जिक्र आपसे नहीं करता। स्वर्ग की बात आपसे नहीं कहता। मैं तो आपसे इनसानी जीवन की बात कह रहा हूँ। परलोक की बात जहन्नुम में जाने दीजिए। परलोक कुछ होता है, मुझे नहीं मालूम कि होता है कि नहीं। मैं तो केवल इस जन्म की बात कहता हूँ। भगवान् होता है कि नहीं, मैं इस झगड़े में नहीं पड़ता। मैं तो आपसे दैहिक और दैनिक जीवन की बात कहता हूँ। फिलॉसफी के जञ्जाल में मैं नहीं फँसता, मैं तो आपको दैनिक और रोजमर्रा के जीवन की बात कहता हूँ।

वापस लाएँ प्यार-मोहब्बत

मित्रो! संस्कृति हमारे दैनिक जीवन में मोहब्बत भरती थी, प्यार भरती थी और सहकारिता भरती थी। जंगल में रहने वाले आदमी और गरीबी में गुजारा करने वाले आदमी अपने-अपने छोटे-छोटे घरौंदों में रहकर खुशहाल रहते थे। स्वर्ग का आनन्द लूटा करते थे। मालूम पड़ता है कि वह संस्कृति धीरे-धीरे मौत के मुँह में जा रही है। नष्ट होती चली जा रही है। अब क्या करना चाहिए? बेटे, हमको और आपको उसे वापस लाने की कोशिश करनी चाहिए। क्योंकि उसमें हमारा, हमारी सन्तानों का, हमारे समाज का और हमारी सारी मानवता का भविष्य टिका हुआ है।

इस संस्कृति को वापस लाया जाये। कहाँ से वापस लाया जाये? लंका[1] से वापस लाया जाये। हम और आप कोशिश करेंगे,तो इसे लंका से वापस लाया जा सकता है। नहीं साहब! रावण[2] बहुत जबरदस्त था। हाँ बेटे, रावण की जबरदस्ती को हम मानते हैं और रास्ते की खाई बहुत बड़ी है, समुद्र जैसी खाई है और इसे पाटना बहुत कठिन काम है। कुम्भकर्ण[3] से लड़ाई लड़ना भी बहुत कठिन मालूम पड़ता है; लेकिन कठिन काम भी तो बेटे इनसानों ने ही किये हैं। कठिन काम भी इन्सान ही कर सकते हैं। हम आखिर इनसान ही तो हैं। आइए, अब संस्कृति की सीता को वापस लाने के लिए चलें।

मित्रो! संस्कृति की सीता को वापस लाने के लिए अब हम क्या कर सकते हैं? हमारी और आपकी जैसी भी हैसियत होगी, कोशिश करेंगे। अच्छे कामों के लिए जब आदमी कमर बाँधकर खड़े हो जाते हैं, तो भगवान् की सहायता उन्हें हमेशा मिली है और हमेशा सहायता मिलेगी। पहले भी मिलती रही है और अभी भी मिलेगी। कब मिली थी? अच्छे उद्देश्य के लिए जब आदमी जान हथेली पर रखकर निकलता है, तो भगवान् भाग करके सहायता करने के लिए आता है। क्यों साहब! यह बात सही है? हाँ बेटे, यदि उद्देश्य ऊँचा हो, तब सही है, अन्यथा उद्देश्य घटिया हो, तब मैं नहीं कह सकता। उद्देश्य ऊँचा हो, तो भगवान् आपको सहायता देगा।

इतिहास पढ़ डालिए। महामानवों के लिए भगवान् ने जितनी ज्यादा सहायता दी है, आप पढ़ डालिए। शुरू से पन्ना पढ़िए। किसी भी

१- लंका सोने की थी, अर्थात् साधन-सुविधाओं से भरी थी। उसे कुबेर ने बसाया था। रावण ने उससे लंका छीन ली। जहाँ साधन-सुविधाओं के लिए भाईचारे को कुर्बान कर दिया जाता है, ऐसे क्षेत्र ऐसी परम्परा की तुलना लंका से की जाती है।

२- मनुष्य के अन्दर स्वार्थनिष्ठ अहंकार से रावण की तुलना की जाती है।

३- समाज के पीड़ा-पतन की भीषण आवाजों से भी जिसकी अपनी मोहनिद्रा नहीं टूटती ऐसी प्रवृत्ति वालों को कुम्भकर्ण की संज्ञा दी जाती है।

क्षेत्र के महामानव और महापुरुष का इतिहास पढ़िए, फिर देखिए कि ऊँचे उद्देश्य के लिए, ईमानदारी से कष्ट उठाने के लिए जो आदमी तैयार हो गये, उनको सहायता मिली कि नहीं मिली? आप चाहे जिस क्षेत्र में देख लीजिए, लाखों की तादाद में लोगों को भगवान् की सहायता, आदर्श सहायता, दैवी सहायता मिलती चली गयी।

इतिहास की पुनरावृत्ति

मित्रो! मैं सीता जी को वापस लाने वालों की बात कह रहा था। आप देखिए कि उन्हें किस तरह से सहायता मिलती चली गयी। क्यों साहब! पानी के ऊपर तैरते हुए पत्थर कहीं होते हैं? कहीं नहीं होते। पानी में डालते ही पत्थर डूब जाता है। पत्थरों के माध्यम से भगवान् ने सहायता की थी। ऐसे पुल बनाये गये थे, जिसमें कि खम्भे नहीं लगाये गये थे। इसके लिए कोई प्लानिंग नहीं की गयी थी। समुद्र के ऊपर पत्थर फेंकते ही वे तैरने लगे और पुल बना दिया गया। अचम्भे की बात है न? लोगों की समझ में नहीं आती। बेटे, यह समझ में आयेगी भी नहीं। मैं ऐसे लाखों उदाहरण बता सकता हूँ, जिसमें कि पत्थर ऊँचे उद्देश्यों के लिए तैरे हैं। जो ऊँचा उद्देश्य लेकर के चले हैं और जान हथेली पर लेकर चले हैं और ईमानदारी से चले हैं, उनके पत्थर तैरे थे और फिर तैरेंगे। नहीं साहब! पत्थर नहीं तैरेगा। हाँ बेटे! पत्थर नहीं तैरेगा। यह अलंकार है। इसका मतलब यह है कि साधन कम हो, सामर्थ्य कम हो, तो भी सफलता मिलेगी।

महाराज जी! और क्या हो सकता है? और बेटे, समुद्र को छलाँगा जा सकता है। आदमी की छलाँगने की ताकत दस फुट हो सकती है, बारह फुट हो सकती है, पन्द्रह फुट हो सकती है। बन्दर के छलाँगने की ताकत, लंगूर के छलाँगने की ताकत मान लें कि ज्यादा से ज्यादा पच्चीस फुट हो सकती है। तीस फुट हो सकती है, चालीस फुट हो सकती है और ज्यादा से ज्यादा पचास फुट हो सकती है। नहीं साहब! बन्दर इतनी

लम्बी छलाँग नहीं मार सकता। तो बेटे, बन्दरों ने समुद्र छलाँगा था? अच्छा, आदमी कितना वजन उठा सकता है? बीस किलो उठा सकता है। नहीं साहब! चालीस किलो उठा सकता है। नहीं साहब! हमने एक पल्लेदार को अपनी पीठ पर एक क्विंटल की बोरी लादते हुए देखा था। चलिए हम आपकी बात मान लेते हैं कि आदमी एक क्विंटल वजन उठा सकता है। तो क्या वह पहाड़ भी उठा लेगा? नहीं साहब! पहाड़ तो नहीं उठा सकता। पहाड़ नहीं उठा सकता, तो देख हनुमान् जी ने ऊँचे उद्देश्य के लिए पहाड़ उठाया था कि नहीं। ऊँचे उद्देश्य के लिए जब आदमी कमर कसकर खड़े हो गये हैं, तो उन्होंने बड़े से बड़ा काम करके दिखाया है। हनुमान् जी ने सीता जी को वापस लाकर दिखाया था।

क्या इतिहास की पुरावृत्ति फिर होना सम्भव है? हाँ, इतिहास की पुनरावृत्ति होना सम्भव है और हम करके दिखायेंगे। मित्रो! संस्कृति की सीता को, जिसके बारे में पहले यह मालूम पड़ता था कि उन्हें वनवास हो गया और वह रावण के घर में कैद हो गयी। अब वहाँ से उनके लौटने की कोई उम्मीद नहीं है, लेकिन रामचन्द्र जी रीछ वानरों के साथ मिलकर उन्हें वापस लाने में समर्थ हुए थे।

मित्रो! हम भी संस्कृति की सीता को लौटाकर ले आयेंगे। क्यों? क्योंकि उससे सारी मनुष्य जाति का भविष्य और भाग्य जुड़ा हुआ है। उससे विश्वशांति जुड़ी हुई है। उससे हमारी पीढ़ियों का और औलादों का भविष्य जुड़ा हुआ है। जिस सुन्दर दुनिया को भगवान् ने बड़ी शान से बनाया है, वह उसकी इच्छा पर टिकी हुई है और उसी से हमारे इनसानी जीवन की सार्थकता टिकी हुई है। इनसान के जीवन के लिए सार्थकता की दृष्टि से जो काम सुपुर्द किए गये हैं, उन्हें भी हम कर सकते हैं। इन सब बातों की वजह से संस्कृति की सीता को वापस लाने का आज हमारा काम है और आप सबको इसी योजना में सम्मिलित होने के लिए बुलाया है।

बस, हमारा यही एक मकसद है, दूसरा कोई नहीं है। आइये, आप और हम मिलकर संस्कृति की सीता को वापस लाने की कोशिश करें।

दैवी सहायता की पात्रता

साथियो! मैं जानता हूँ कि आपके पास ताकत बहुत कम है और आप कह सकते हैं कि हमारे पास इतनी सामर्थ्य नहीं है कि हम इतना बड़ा काम कर सकें। आपको मैं याद दिलाना चाहता हूँ कि गिलहरी, जिसके पास कोई ताकत नहीं थी और जिसके पास पङ्गे भी नहीं थे, वह अपने बालों में धूल भरकर डालती थी। आप गिलहरी से तो कमजोर नहीं हैं। नहीं साहब! गिलहरी से तो कमजोर नहीं हैं। तो भाई साहब! आप भी कुछ कर सकते हैं।

और गिद्ध? गिद्ध तो बूढ़ा था। उसे आँख से दिखाई भी नहीं पड़ता था कि लड़ाई में पड़े। लेकिन बुड्ढा, जिसको आँखों से भी नहीं दिखाई पड़ता था और वह आदमी भी नहीं था, पक्षी था। आप तो पक्षी नहीं हैं? नहीं साहब! आदमी हैं। आप बातचीत तो कर सकते हैं? हाँ साहब! कर सकते हैं। आपके दो हाथ और दो पैर हैं, पर उस गिद्ध के तो दो ही थे। बेटे, जब बूढ़ा गिद्ध युद्ध के लिए खड़ा हो सकता है, तो आप क्यों नहीं? जब ग्वालबाल पहाड़ उठाने के लिए अपनी सहायता देने के लिए अपनी लाठी और डण्डे ले करके खड़े हो सकते थे। क्रेन उनके पास नहीं थी और न कोई ऐसी दूसरी चीज थी जिससे कि पहाड़ उठाया जा सके। कोई सम्बल भी नहीं थे, कोई कुछ नहीं था। वही जानवर हाँकने की लाठियाँ थीं, उन्हें ले करके खड़े हो गये थे।

तो क्या पहाड़ उठ गया था? हाँ उठ गया था। क्यों? क्योंकि ऊँचे उद्देश्य के लिए भावभरे प्राणवान् व्यक्ति प्राणभरी साँस लेकर जब खड़े हो जाते हैं, तो उनको भगवान् की सहायता मिलती है। हमको मिलेगी? नहीं, आपको नहीं मिलेगी। क्यों? क्योंकि आप हैं-चोर, आप हैं चालाक। चोर और चालाकों के लिए भगवान् की

सहायता सुरक्षित नहीं है। हमको मकान बनवा दीजिए, हमको पैसा दे दीजिए, हमारी औरत को जेवर बनवा दीजिए। चल, धूर्त कहीं का- भगवान् की सहायता इन्हीं कामों के लिए रह गयी है?

देवी को सहायता करनी चाहिए थी। कौन है तू? देवी का जँवाई है? चाण्डाल कहीं का। देवी को हमारी सहायता करनी चाहिए थी। किस बात की देवी सहायता करे? नहीं साहब! हमारी मनोकामना पूरी करे। क्यों पूरी करनी चाहिए? हमने तीन माला जप किया है। ले जा अपनी माला। माला लिए फिरता है। देवी को माला पहना देंगे, नारियल खिला देंगे। देवी को धूपबत्ती दिखा देंगे, खाना खिला देंगे और मनोकामना पूरी करा लेंगे। महाराज जी! अब तो आप देवी की निन्दा कर रहे हैं। नहीं बेटे, देवी की निन्दा नहीं कर रहा हूँ, वरन् तेरे ईमान की निन्दा कर रहा हूँ। तू जिस ईमान को लेकर के चला है, जिस उद्देश्य को ले करके चला है, मैं उस उद्देश्य की निन्दा कर रहा हूँ। उसकी ओर से देवी को नफरत है और देवी तेरी ओर मुँह उठा करके भी नहीं देखेगी।

मित्रो! देवी किसकी सहायती करती है? देवी जप करने वाले की सहायता नहीं करती, पाठ करने वाले की सहायता नहीं करती। देवी उनकी सहायता करती है, जिनके उद्देश्य ऊँचे हैं, जिनके लक्ष्य ऊँचे हैं, जिनके सामने कोई मकसद है, जिनके सामने कोई उद्देश्य है। उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए जब आदमी उठ खड़े होते हैं, तब देवताओं की भरपूर सहायता मिलती है। देवताओं को आपने देखा नहीं है। बीसियों जगह विवरण आता है, जहाँ देवता फूल बरसाने आये।

क्यों साहब! देवताओं का केवल यही काम है-फूल बरसाना? यह क्या बात है? क्या वे कौम के माली हैं? इनके यहाँ फूलों की खेती होती है? जहाँ कहीं भी शादी होती है, अच्छा काम होता है, वे फूल लेकर के जाते हैं और बिखेर देते हैं और पीछे से पैसे माँगते हैं। लाइए साढ़े आठ रुपये, हमने आपके यहाँ फूल बरसा दिए। देवताओं को और

कोई काम नहीं है ? जहाँ जाते हैं, वहीं फूल बरसाते रहते हैं। रामायण में आप पढ़ लीजिए, बीसियों जगह फूल बरसे हैं। रामचन्द्र जी जब पैदा हुए, तब बरसे। रामचन्द्र जी का विवाह हुआ, तब बरसे। देवताओं ने विमान पर चढ़ करके फूल बरसाये। क्यों साहब! देवता फूल बरसाते हैं ? हाँ बेटे, लेकिन फूल बरसाने से मतबल है- सहयोग करना, सहकार करना, प्रशंसा करना, समर्थन करना और सहायता देना।

देवताओं का स्वभाव और सहयोग

मित्रो! देवता हमेशा फूल बरसाते हैं और हमेशा बरसायेंगे, लेकिन उनके ऊपर बरसायेंगे, जो कोई ऊँचा उद्देश्य लेकर के चलेंगे। जो कोई ऊँचा मकसद लेकर के चलेंगे। जो कोई ऐसा काम लेकर के चले हैं, जिससे कि विश्वहित जुड़ा हुआ हो, जिससे किन्हीं सिद्धान्तों का परिपालन होता हो, किन्हीं आदर्शों का परिपालन होता हो, उनके लिए देवता की सहायता सुरक्षित है। लेकिन उनके लिए सुरक्षित नहीं है, जो कर्महीन, कर्म से भागने वाले, परिश्रम से जी चुराने वाले, हराम में देवताओं की कृपा माँगने वाले हैं। देवताओं के दरवाजे इनके लिए बन्द हैं। देवता उनकी सहायता करेंगे ? नहीं करेंगे। किनकी ? जो देवता को अनैतिक बनाता है, जो देवता को अन्धेरगर्दी का माध्यम बनाता है। नीति और मर्यादा को तोड़ देने वाला बनाता है। आपने तो सारी मर्यादाएँ तोड़ डालीं, नीतियाँ तोड़ डालीं, अब क्या देवता को भी अपने जैसा बनायेंगे ?

आप देवता जैसे नहीं बन सकते, तो कम से कम इतनी कृपा कीजिए कि देवता को अपने जैसा मत बनाइये। देवता को अपने जैसा घिनौना मत बनाइये, जो अकर्मण्य लोगों की, स्वार्थी लोगों की, चालाक लोगों की, बेईमान लोगों की, बदमाश लोगों की सहायता करे। यह तो मत कीजिए। देवता की इज्जत की रखवाली तो कीजिए। देवता को तो बेइज्जत मत कीजिए। देवता को तो चरित्रवान् रहने दीजिए। देवता को तो विवेकशील रहने दीजिए।

मित्रो! हमको और आपको क्या करना पड़ेगा? यदि देवता के प्रति वास्तव में प्यार है, तो हमें देवता के मार्ग पर चलना पड़ेगा। देवता के मार्ग पर चलना किसे कहते हैं? इसके लिए ही मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि संस्कृति की सीता को वापस लाने के लिए रामचन्द्र जी ने अवतार लिया था। जब दुनिया से पाप का हरण करने के लिए उनने अवतार लिया था, तो देवताओं ने कहा था कि भगवान् जी आप चलते हैं? हाँ साहब! अब आप अवतार लेंगे? हाँ साहब! अवतार लेंगे, तो आप अकेले काम नहीं कर सकेंगे? अकेला काम क्यों नहीं कर सकता? 'अकेला चना भाड़ को नहीं फोड़ सकता।' आप अकेले पुल नहीं बना पायेंगे। आप अकेले पहाड़ नहीं उखाड़ पायेंगे। आप अकेले इतने राक्षसों से नहीं लड़ पायेंगे। इसलिए सहायकों की जरूरत है। बेशक उनके साथ सहायक आये थे। कौन-कौन आये थे? देवताओं ने कहा कि आपके साथ-साथ में मनुष्यों के रूप में, रीछ-वानरों के वेष में हम जायेंगे, जन्म लेंगे।

आज का मनुष्य तो बड़ा चालाक है। उसका सारे का सारा दायरा ऐसे बदमाशों से भरा पड़ा है कि जब हम कुछ अच्छा काम करने लगेंगे, तो हमारी अक्ल खराब करने के लिए हजार आदमी आ जायेंगे। हमारी औरत आ जायेगी, हमारा बाप आ जायेगा, हमारा भाई आ जायेगा, हमारे मोहल्ले वाले आ जायेंगे, हमारे रिश्तेदार आ जायेंगे। हमारा साला आ जायेगा, सब आ जायेंगे और कहेंगे कि अच्छा काम मत कीजिए। त्याग-बलिदान की बात मत सोचिए। माल मारने की बात सोचिए। डाका डालने की बात सोचिए। हर आदमी की एक ही सलाह रहेगी, दूसरी सलाह मिलेगी नहीं, जिससे कि शायद हमारा ईमान खराब हो जाये। इसलिए हम आपके साथ चलेंगे।

देवताओं ने क्या किया? सारे के सारे देवता रीछ और वानरों के रूप में जन्म लेकर धरती पर आ गये। उन्होंने वह काम किया था, जो

देवताओं को करना चाहिए। किन-किनने किया था? रीछों ने किया था, वानरों ने किया था। देवता भी बार-बार अवतार लेते रहे हैं। वे दुनिया में किस काम के लिए अवतार लेते रहे हैं? देवता दुनिया में किस काम के लिए आते रहे हैं? वे केवल एक काम के लिए आते हैं—श्रेष्ठ कामों के लिए सहायता करने के लिए।

देवता श्रीकृष्ण भगवान् के जमाने में भी आये थे। कौन-कौन आये थे? पाण्डव कौन थे? पाण्डव मनुष्य थे? नहीं मनुष्य नहीं थे? कुन्ती से पूछो कौन थे? भगवान् श्रीकृष्ण जब आये थे, तो उन्हें देवताओं की सहकारिता की जरूरत पड़ी थी, तो देवताओं ने जन्म लिया था। पाँच पाण्डव कौन थे? देख, उनमें से एक धर्मराज का बेटा था, एक इन्द्र का बेटा था, एक पवन का बेटा था। दो अश्विनीकुमारों के बेटे थे। सब देवताओं के बेटे थे। तो क्या किया उन्होंने? माल मारा? मकान बनाए? जायदाद बनायी? औरतों के लिए सोने के जेवर बनाये? क्यों साहब! जो देवता जितना बड़ा मालदार, वह उतना ही बड़ा भाग्यवान् होता है? भगवान् जिसको जितनी दौलत दे, वह उतना ही भाग्यवान् होता है। नहीं बेटे, आध्यात्मिक दृष्टि से वह भाग्यवान् नहीं होता। आध्यात्मिक दृष्टि से भाग्यवान् वह होता है कि जिसने जितना त्याग करके दिखाया है। जिसने जितना साहस करके दिखाया है।

देवत्व आचरण से सिद्ध होता है

मित्रो! पाण्डवों का जीवन आरम्भ से लेकर अन्तिम समय तक कठिनाइयों का जीवन है। मुसीबतों का जीवन है। कष्टों का जीवन है। श्रेष्ठ कामों के लिए जो आदमी कष्ट उठा सकते हैं, त्याग कर सकते हैं और मुसीबतें सह सकते हैं, देवता उन्हीं का नाम है। नहीं साहब! देवता जिस पर प्रसन्न होते हैं, उसका घर सोने का बना देते हैं। उसके बेटे को इनकम टैक्स ऑफीसर बना देते हैं। बक मत। देवत्व जिसके भीतर आता है, वह दूसरों का अपने चरित्र के माध्यम से शिक्षण करता है। क्या हम अपने

सिद्धान्तों के प्रति पक्के और सच्चे हैं? हम कैसे मानें कि आप सच्चे हैं और पक्के हैं?

आपकी परीक्षा होनी चाहिए, परीक्षा के बिना हम कैसे जानेंगे कि आप सच्चे हैं कि अच्छे हैं? हर आदमी को अपने सच्चे होने की और अच्छे होने की परीक्षा देनी पड़ती है। यह परीक्षा कैसे हो सकती है? बेटे, कठिनाइयों से होती है और कैसे होती है? नहीं साहब! आप इम्तिहान ले लीजिए। आप सवाल पूछ लीजिए, हम लिखकर दे देंगे। बेटे, इसमें सवाल नहीं पूछा जाता, वरन् चरित्र के माध्यम से पता लगाना पड़ता है कि व्यक्ति जबान से जिन सिद्धान्तों को बक-बक करता है और जब मुसीबत का वक्त आता है, कठिनाई का वक्त आता है, तो उनका पालन कर सकता है कि नहीं कर सकता।

साथियो! इसकी एक ही परीक्षा है, दूसरी कोई नहीं है कि आप कठिनाइयों में सही साबित होते हैं कि नहीं, यह बताइये। लोभ का दबाव आने पर आप सही साबित होते हैं कि नहीं। मोह का दबाव आने पर आप सही साबित होते हैं कि नहीं। सिद्धान्तों के प्रति, जिनकी आप हर वक्त दुहाई देते रहते हैं, उनका रक्षण करने के लिए लोभ का दबाव, मोह का दबाव आप मानते हैं कि नहीं? इनसान के बाहर वाले हिस्से पर पड़ने वाले दबाव तो कई हो सकते हैं, लेकिन भीतर वाले हिस्से पर बस दो ही दबाव दुनिया में काम करते हैं। एक लोभ का, जो हमको सिद्धान्तों की तरफ नहीं बढ़ने देता। दूसरा मोह का, जो सिद्धान्तों की ओर हमको बढ़ने नहीं देता। लोभ और मोह से, चैन और आराम से खुशहाली और ऐय्याशी से अपने आपका बचाव करके जो आदमी सिद्धान्तों के लिए अग्नि परीक्षा में चढ़ सकते हैं, वही आदमी देवता कहला सकते हैं। श्रीकृष्ण भगवान् के साथ भी देवता आये थे और कौन-कौन के साथ में आये थे? बेटे, सबके साथ में देवता आये थे। भगवान् के साथ-साथ देवता भी हमेशा आते रहे हैं।

साथियो! हमको और आपको जो काम करना है, मैंने आपको उसकी याद दिलायी कि पुराने जमाने के इतिहास से आप संगति मिलाते हुए अपना मुँह शीशे में देख सकते हैं। आपके भीतर भी एक ऐसा ही देवता झाँकता हुआ मिलेगा, जैसा कि मैंने आपसे कहा है। शायद आपके भीतर से कोई हनुमान् झाँकता हुआ दिखाई दे। दुनिया को आप देखते हैं कि नहीं, कभी अपने आप को भी देखना, तब आप अपने भीतर की बुराइयों को भी देखेंगे, पर मैं चाहूँगा कि आप अपने भीतर देवता की झाँकी करें। आप अपने भीतर एक ऐसे व्यक्तित्व की झाँकी करें, जो पाप के पंक में फँसा हुआ-सा नहीं है। यदि उसे मौका मिले, तो वह हनुमान् जैसी भूमिका भी निभा सकता है और नल-नील जैसी भूमिका भी निभा सकता है और इतिहास में बहुत बड़ा काम कर सकता है। आप अपनी भूमिका निभा पाएँ, इसलिए आपको आत्मबोध कराने के लिए, आपकी परिस्थिति से अवगत कराने के लिए, आपके लिए जो उचित काम है, कर्त्तव्य है, उसका उद्बोधन कराने के लिए आपको प्रेरित किया जा रहा है।

अवसर का महत्त्व समझें

बेटे, यह युग बदलने का वक्त है। युग सन्ध्या का वक्त है। यह बार-बार नहीं आयेगा। एक ही बार आया है और यह चला जायेगा। दुबारा नहीं आ सकता। गाँधी जी का उन्यासी आदमियों का जत्था जिस समय नमक बनाने के लिए गया था, मैं भी उन दिनों वहीं था। साबरमती के आश्रम में गाँधी जी के पास में रहता था। क्योंकि मेरी उम्र अठारह साल से कम थी, इसलिए नाबालिग होने की वजह से उन्होंने इनकार कर दिया था कि आप वहाँ नहीं जा सकते। आपकी उम्र छोटी है, इसलिए हम नमक सत्याग्रहियों में आपको लेकर नहीं चलेंगे। हमको नहीं लिया गया, लेकिन उन्यासी आदमी, जो नमक बनाने के लिए गये थे, उन सत्याग्रहियों की फिल्म जब देहरादून आयी, तो हमने वह फिल्म

देखी। यू.पी. सरकार की फिल्म हम मँगाते रहते हैं। हमारे पास फिल्म प्रोजेक्टर था। यहाँ बच्चों को-लड़कियों को दिखाते रहते थे। *(यह घटना सन् ७० के दशक की है। देवकन्याओं के प्रशिक्षण सत्र शान्तिकुञ्ज में चल रहे थे। उनके स्वस्थ मनोरंजन के लिए १६ मि.मि. के फिल्म प्रोजेक्टर की व्यवस्था की गई थी। भारत सरकार सूचना प्रकाशन विभाग की फिल्मों में गाँधी जी की डाण्डी यात्रा की फिल्म भी मिल गई थी। उसे सबने देखा था।)*

हमने गाँधी जी की वह फिल्म देखी, जिसमें वे नमक बनाने के लिए गये थे। उन्यासी आदमियों में से एक-एक कर सामने आते चले गये। हरिभाऊ उपाध्याय आते चले गए, महादेव भाई देसाई आते चले गये। गाँधी जी लाठी लेकर डाण्डी यात्रा में चल रहे हैं। वहाँ बरगद के पेड़ के नीचे ठहर रहे हैं। बाकी सत्याग्रहियों का जत्था एक के बाद एक चल रहा है। हम नहीं जा सके। हमारे मन में आया कि अगर मैं भी अठारह वर्ष की उम्र का रहा होता और भगवान् ने अगर मौका दे दिया होता तो मैं भी गया होता, हमारी भी फिल्म सारे भारतवर्ष में दिखाई जाती, पर क्या करें? समय था, जो निकल गया। तो क्या वह मौका दुबारा आयेगा?

मित्रो! यह कौन-सा मौका है? युग बदल रहा है और आपके लिए युग बदलने की भूमिका दिखाने का मौका है। आप दुबारा मौका देंगे? बेटे, यह दुबारा नहीं मिल सकता। यह मौका, जिसमें आपको याद दिलाने के लिए बुलाया गया है। आप चाहें तो इस मौके का लाभ उठा लीजिए, अन्यथा एक बात मैं कहे देता हूँ कि आपके बिना कोई काम रुकने वाला नहीं है। सीता वापस आ जायेगी? हाँ, सीता वापस आ जायेगी। युग बदल जायेगा? जरूर बदल जायेगा। हमारे बिना भी बदल जायेगा? मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आपके बिना भी बिलकुल बदल जायेगा। फिर क्या हर्ज होगा? आपका ज्यादा हर्ज होगा। आप

पछताते रहेंगे। जिस तरीके से कांग्रेस के आन्दोलन में जिन-जिन लोगों को तीन महीने की सजा हुई थी, उनको पेंशन मिल रही है। जिनको तीन महीने की सजा हुई थी, आजकल वे मिनिस्टर हो गये हैं।

स्वतंत्रता सेनानी कैसा होता है? बेटे, स्वतंत्रता सेनानी बड़ा जबरदस्त होता है। कैसे? ऐसे जो तीन महीने जेल रह आया, वह स्वतंत्रता सेनानी हो जाता है। गुरुजी! तीन महीने जेल जाने पर कोई आदमी ज्यादा दु:खी तो नहीं होता? बेटे, हम तो पौने चार बरस रहे हैं। हमारा तो कुछ खराब नहीं हुआ। हम बहुत अच्छी तरह रहे हैं। साहब! हमको भी तीन महीने के लिए जेल भिजवा दीजिए? तो फिर तू क्या करेगा? मैं भी स्वतंत्रता सेनानी का परिचय पत्र दिखाऊँगा और फिर मिनिस्टर भी हो सकता हूँ और एम.एल.ए. का चुनाव भी लड़ सकता हूँ। यह तो ठीक है। तो आप भिजवा दीजिए। हाँ बेटे, भिजवा दूँगा।

अच्छा बेटे, एक काम कर, अपने यहाँ जुए का एक अड्डा बना ले और सारे मोहल्ले वालों को बुलाकर जुआ खेल। फिर मैं क्या करूँगा? पुलिस वाले के पास जाऊँगा और चुपचाप कह दूँगा कि भाई साहब! मेरे साथ चलिए। अभी मैं जुआरियों को गिरफ्तार कराता हूँ। खट से पुलिस आ जायेगी और पैसे समेत तुझे और तेरे साथियों को पकड़ ले जायेगी। फिर क्या होगा? फिर तुझे तीन महीने की जेल हो जायेगी और तेरे जितने सम्बन्धी हैं, उन सबको जेल हो जायेगी। तेरे साथ-साथ में उन सबको फाइन लग जायेगा। वे भी सब जेल चले जायेंगे। फिर क्या हो जायेगा? वे सब मिनिस्टर हो जायेंगे। तू भी मिनिस्टर हो जाना, तेरे बहनोई, साला, पड़ोसी, नौकर चाकर-जो भी जुए में पकड़े जायेंगे, वे सब जेल चले जायेंगे और सब मिनिस्टर हो जायेंगे और सबको पेंशन मिलेगी।

गुरुजी! आप तो मजाक करते हैं। बेटे, बिलकुल मजाक कर रहा था। ऐसा कैसे हो सकता है? तो फिर आप सच-सच बताइये कि कोई

और रास्ता है? हम तीन महीने के लिए जेल जाने के लिए तैयार हैं। हम चाहें तो छुट्टी ले लेंगे, अपनी खेती से हर्ज कर देंगे। खेती के लिए नौकर रख लेंगे, पर आप हमको जेल भिजवा दीजिए और ढाई सौ रुपये महीने की पेंशन दिला दीजिए। बेटे, अब हम नहीं दिला सकते। अब वह मौका चला गया। जब मौका था, तब तेरे पास दिल नहीं था और जब यह समय आ गया है, तब औरों को देखकर के कहता है कि हमको भी पेंशन दिला दीजिए। जब समय था, तो नल-नील भी इतिहास प्रसिद्ध हो गये थे, गीध भी हो गये थे, गिलहरी भी हो गये थे, जामवंत भी हो गये थे। अब वह समय चला गया। अब क्या रखा है?

यह युग परिवर्तन की वेला है

मित्रो! यही समय है, जिसके लिए मैं आपको याद दिलाता था और इसीलिए इस शिविर में आपको बुलाया है। अगर आप समय को परख सकते हों, समय को देख सकते हों, समय को जान सकते हों, तो आप यह देख लें कि यह युग परिवर्तन का समय है। इससे अच्छा, बेहतरीन समय शायद आपके जीवन में दुबारा नहीं आयेगा और मैं तो केवल आपके जीवन की बात नहीं कहता हूँ, हजारों वर्षों तक ऐसा समय नहीं आयेगा, जैसा कि हम और आप जिस समय में बैठे हुए हैं। आपको इस समय में क्या करना चाहिए? बेटे, आपको एक ही काम करना चाहिए कि संस्कृति की सीता को वापस लाने के लिए मेहनत करनी चाहिए और मशक्कत करनी चाहिए।

अच्छा आप कार्यक्रम बताइये? बेटे, आपके सामने जो कार्यक्रम पेश किया है, आज की परिस्थिति में इससे अच्छा दूसरा नहीं हो सकता। आज की क्या परिस्थिति है? आज की परिस्थिति एक ही है कि आज के युग का जो रावण है, वह क्या है? इस युग की पूतना क्या है? इस युग की ताड़का क्या है? इस युग की सूर्पणखा क्या है? इस युग की राक्षसी क्या है? इस युग की एक ही राक्षसी है, जिसका नाम

है-बेअकली। आदमी के अन्दर बेअकली इस कदर हावी हुई है कि जबसे दुनिया बनाई गयी और तब से आज का दिन है, मैं सोचता हूँ कि बेअकली का दौर इतना ज्यादा कभी नहीं हुआ, जितना कि आज है।

आज आदमी कितना शिक्षित होता हुआ चला जाता है, पर बेअकली की हद है। कहाँ तक पढ़ा है? पढ़ने वाले के ऊपर लानत। जाने कहाँ तक पढ़ते जाते हैं। बी.ए. पास है, एम.ए. पास है। अच्छा तो यह कमाता तो जरूर होगा? लेकिन बेअक ली के मामले में ये वो आदमी हैं, जिनको मैं 'बेहूदा' शब्द कहूँ, तो भी कम है। आदमी जीवन की समस्याओं के बारे में इतना ज्यादा गैर जिम्मेदार है कि जिसके दु:खों का ठिकाना नहीं है। जहाँ भी वह रहता है, क्लेश पैदा करता रहता है। दफ्तर में रहता है, तो क्लेश पैदा करता है। जहाँ कहीं भी जाता है, क्लेश पैदा करता है। अपने लिए भी और अन्यों के लिए भी। यह बेअकल आदमी है, जिसको जिन्दगी का मजा, जिन्दगी का सौंदर्य, जिन्दगी का सुख लेना आता ही नहीं। जिन्दगी का सुख और सौन्दर्य कैसे हो सकता है? इसके बारे में हमें क्या विचार करना चाहिए? हमको मालूम ही नहीं है।

घर-घर जाकर बेअकली दूर करनी होगी

मित्रो! क्या करना पड़ेगा? आज के जमाने में सिर्फ एक काम करना पड़ेगा कि हमको जन-जन के पास जाकर के उनकी बेअकली को दूर करना पड़ेगा। जहाँ-जहाँ तक वह फैली हुई है, उसको दूर करने के लिए हमको वह काम करना पड़ेगा, जो परिव्राजक अभियान के अन्तर्गत हमारे प्राचीनकाल के ऋषि किया करते थे। मध्यकालीन तीर्थयात्री किया करते थे। अन्तिम समय में भगवान् बुद्ध के शिष्यों, परिव्राजकों ने किया था। आपको यही करना पड़ेगा। घर-घर में जाना पड़ेगा। घर-घर को जगाना पड़ेगा। घर-घर में जो अवांछनीयता की और अनैतिकता की बीमारियाँ फैली पड़ी हैं, घर-घर में दवा बाँटनी पड़ेगी। आपको घर-घर में डी.डी.टी. छिड़कनी पड़ेगी। घर-घर में इसके छिड़काव की जरूरत

है। क्योंकि मलेरिया बहुत जोर से फैल गया है। मलेरिया के मच्छर बेहिसाब से आ रहे हैं। घर-घर जाइये।

नहीं साहब! मच्छरों को यहीं बुलाकर लाइये और जो घर की सीलन है, सबके यहाँ खबर भेजिए कि लिफाफे में बन्दकर डाकखाने के माध्यम से हमारे पास मच्छरों को भेज दें। मलेरिया के मच्छर जैसे ही हमारे पास आयेंगे, हम सबको पकड़ लेंगे। भाई साहब! मलेरिया के मच्छर आपके यहाँ नहीं आ सकते, आप चाहें तो वहाँ पर जा सकते हैं। मलेरिया आपके यहाँ नहीं आयेगा, आप चाहें तो वहाँ जा सकते हैं। आप डी.डी.टी., लेकर घरों में जा सकते हैं। घर आपकी डी.डी.टी. के पास नहीं आयेंगे।

जन-जागरण हेतु बड़ी सेना की तैयारी

इसलिए मित्रो! आज का सबसे बड़ा काम वह है, जो हम आपके सुपुर्द करते हैं। क्या सुपुर्द करते हैं? जन-जागरण का काम करना पड़ेगा। जन-साधारण को जगाना पड़ेगा। फिर आदमी का वह शिक्षण करना पड़ेगा, जिससे उसकी विचारणा और उसके चिन्तन को नये सिरे से दिशा दी जा सके। नये सिरे से उसमें हेरफेर पैदा किया जा सके। अगले दिनों हमको यही करना पड़ेगा। अगले दिनों आपकी वानप्रस्थ योजना, जो बड़ी समर्थ योजना है, बड़ी सशक्त योजना है, बड़ी सांगोपांग योजना है, इसी को चलायेंगे।

आप इतनी बड़ी योजना चलायेंगे? हाँ बेटे, इतनी बड़ी योजना चलायेंगे। अब तक हम अकेले काम करते थे। तब हमारे पास क्या था? बस दो, चार-दस आदमी गायत्री तपोभूमि पर रहते थे। पाँच-पचास आदमी और थे, जिन्हें जहाँ-तहाँ भेजते थे। अब क्या करेंगे? अब बेटे, हम क्रमबद्ध रूप से परिव्राजक योजना को चलायेंगे। पहले शिविर में आपके जितने आदमी थे। दोनों शिविरों को मिलाकर तीन सौ के करीब हो जाते हैं। ये सबके सब तो नहीं जायेंगे, लेकिन आप यकीन रखिए,

यहाँ शिविर में जो आते हैं, उतने ही आदमी नहीं हैं। हम अपने सारे के सारे गायत्री परिवार के लोगों को जगायेंगे और बुलायेंगे। समयदानियों से ले करके वरिष्ठ वानप्रस्थियों तक की कितनी बड़ी सेना बना लेंगे।

मित्रो! हम कोशिश करेंगे कि उसी स्तर की, उसी संख्या में सेना बना दें, जितनी कि भगवान् बुद्ध बनाने में समर्थ हुए थे। एक लाख के करीब उन्होंने शिष्य बनाये थे और ईसाई मिशन के पास भी एक लाख के करीब पादरी हैं। आप भी इतनी हिम्मत करते हैं? बेटे, कोशिश करेंगे। इतने आदमी यहाँ शान्तिकुञ्ज में तो नहीं रह सकते, लेकिन हमारा ऐसा ख्याल है कि हम गाँव-गाँव में और देश-देश में और घर-घर में शान्तिकुञ्ज बनायेंगे और जाग्रत् केन्द्र बनायेंगे। वहाँ से फिर ईसाई मिशन के तरीके से हम नये वानप्रस्थी पैदा कर सकते हैं। बेटे, हमारे ख्वाब बड़े महत्वाकांक्षी हैं। आगे क्या होगा? भगवान् जाने, लेकिन हमारे ख्वाब जरूर ऐसे हैं। नहीं साहब! आज की बात बताइए? आज की बात तो यह है कि छोटे से कार्यक्रम के लिए हम आपको भेजते हैं। बड़ा काम तो हम बाद में सुपुर्द करेंगे।

जब हम विदेश गये, तो हर जगह हमसे एक ही बात कही गयी कि साहब! प्राचीनकाल में संत और ऋषि थे। अब संत और ऋषि रहे कहाँ? उनने कहा कि यदि रहे होते, तो आप उन्हें क्यों नहीं भेजते? हमारे देश में भारत का धर्म और संस्कृति खत्म होती चली जा रही है। हमें ब्याह कराने तक की विधि मालूम नहीं है। हमको हिन्दुस्तानी तक बोलना नहीं आता। अब अगर आप हमारे यहाँ कोई आदमी भेज दें, तो कम से कम हमारे बच्चों को, हमारी महिलाओं को वे ज्ञान कराते रहेंगे। हमारे यहाँ भी कुछ काम चलता रहेगा, संस्कार होते रहेंगे। हम तो संस्कार भी नहीं कराते और कोर्ट में जाकर के, अदालत में जा करके रजिस्ट्रेशन करा लेते हैं। हमको हवन विधि भी नहीं आती। आप कुछ लोगों को यहाँ भेज दें, तो कुछ काम बने। बेटे, हम भेजने की कोशिश करेंगे।

मित्रो! विदेश जितने आदमी जाते हैं, वे व्याख्यान झाड़ने के लिए जाते हैं। वे समझते हैं कि हमें स्टेज पर बोलना आ गया, तो जाने क्या आ गया? वे व्याख्यान देते हैं और इस तरह की वाणियाँ बोलते हैं और फिर कहते हैं कि हम आश्रम बनायेंगे, मन्दिर बनायेंगे। आश्रम की, मन्दिर की सब योजनाएँ लेकर जाते हैं और वहाँ से पाँच-पच्चीस हजार रुपये इकट्ठे कर लेते हैं। आने-जाने का खर्च अलग से वसूल कर लेते हैं। पन्द्रह हजार हवाई जहाज का किराया खर्च कराया। पच्चीस हजार उसका ले लिया। महीने भर के अन्दर चालीस हजार का बेचारों को चाकू मारकर चले आये। *(खर्च के यह अनुमानित आँकड़े सन् १९७७-१९७८ के हैं।)* इस तरह लोग विदेश जाते हैं और दस दिन वहाँ, बीस दिन वहाँ लेक्चर झाड़ करके और यहाँ-वहाँ घूमघाम करके महीने भर की छुट्टी काट करके आ जाते हैं। साहब! मुझे भेज दीजिए। मैं ऐसा लेक्चर झाड़ना जानता हूँ कि बस मजमा बाँध दूँगा। बेटे, अगर तेरे लेक्चर को हम टेप करा करके भेज दें तो? नहीं महाराज जी! टेप कराकर मत भेजिए। मुझे ही भेज दीजिए। चल बदमाश कहीं का। इस तरीके से सारे के सारे जेबकट आदमी लेक्चर झाड़ने के लिए यहाँ से वहाँ मारे-मारे डोलते हैं। हमें सृजेता स्तर के व्यक्ति तैयार करने हैं।

कांगो का संत

मित्रो! एक बार मैं कांगो गया। कांगो वह देश है, जिसमें आदमियों की ऊँचाई और लम्बाई कोई ऐसी होती है-तीन और चार फुट के बीच। प्राय: अधिकांश आदमी नंगे रहते हैं। औरतें पत्तों से अपना तन ढक लेती हैं। खेती-बाड़ी? तीन फुट का आदमी खेती-बाड़ी क्या करेगा? वे छोटे-छोटे भाले और छोटी-छोटी लाठियाँ लिए फिरते हैं। इन्हीं से बेचारे मेढक मार लेते हैं। चूहे, चिड़िया-इन्हीं को जाल में फँसा लेते हैं और भून-भानकर खाते रहते हैं। घूमते-फिरते रहते हैं। इन गरीबों के पास न पैसा है, न दान-दक्षिणा का साधन है। उनके बीच में स्विटजरलैण्ड

के एक पादरी चालीस साल से काम कर रहे थे। वे वहीं डेरा डाले हुए पड़े थे। उनने उन लोगों से कहा कि ईसा एक भूली हुई भेड़ को, जो भटक गई थी, कन्धे पर रखकर लाये थे। तो ये भूले हुए लोग, पिछड़े हुए लोग हैं, जिनकी हम सेवा करने आये हैं। अब हम यहीं रहेंगे। वे वहीं रहने लगे।

उन लोगों के पास न डाकखाने का इन्तजाम था, न सड़कें थीं, न सिनेमा, न कोई आनन्द, न आने-जाने का साधन, न कोई सवारी- कोई कुछ नहीं था। जंगल में रहते थे। पानी के जहाज कभी आते थे, तो वही कुछ सामान छोड़ कर चले जाते थे। विदेशों से जब कोई पानी के जहाज आते थे, तो हजामत बनाने के ब्लेड, चाय के पैकेट आदि ईसाई मिशन उन्हें भेज देता था। वहीं से सिला हुआ कपड़ा आ गया। इस तरह जो कुछ आ गया, उसी से गुजारा कर लिया। इस तरह चालीस साल से वे वहाँ निवास कर रहे थे।

ये कौन थे? इनका नाम था पादरी; इनका नाम था साधु। इनका नाम था परिव्राजक। मेरे मन में आया कि इनके चरणों को धोकर के पानी ले चलूँ और इन बाबाजीयों के ऊपर छिड़क दूँ। कौन से बाबा जी? ये साठ लाख भिखमंगे। सात लाख गाँव और साठ लाख बाबा जी। हर गाँव पीछे-साढ़े आठ बाबा जी आते थे। साढ़े आठ बाबाजी एक गाँव में रहें तो, शिक्षा की समस्या, साक्षरता की समस्या, सामाजिक कुरीतियों की समस्या, गन्दगी की समस्या, पिछड़ेपन आदि की जितनी भी समस्याएँ थीं, साढ़े आठ आदमियों ने ठीक कर दिया होता। लेकिन हम क्या कर सकते हैं? शुरू से आखिर तक ढोंग। देवताओं की लगाम पकड़ करके, देवताओं की आड़ का बहाना लेकर के सब बाबा जी इस देवता की पूजा, हनुमान् जी की पूजा, सन्तोषीमाता की पूजा की आड़ में, धर्म की आड़ में जो मन में आए वह करते हुए पाये जाते हैं।

चरित्र से होगा लोक शिक्षण

क्या करना पड़ेगा? बेटे, फिर आपको वहाँ से वापस चलना पड़ेगा, जहाँ कि हमारी संत परम्परा के अनुरूप हम घर-घर जायें और

जन-जागरण का शंख बजायें और कायाकल्प करने में समर्थ हो जायें। यह हमारा लम्बा वाला प्लान है। लम्बे वाले प्लान के लिए क्या करना पड़ेगा? जलता हुआ दीपक जहाँ भी जायेगा, वहाँ प्रकाश पैदा करेगा। जिसके पास व्यक्तित्व है, ऐसा व्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति जहाँ भी जायेगा, दूसरे व्यक्तियों को ठीक कर सकता है। व्यक्तित्व वाला व्यक्तित्व को ठीक कर सकता है। नहीं साहब, हमें तो बोलना सिखाइये? हम आपको बोलना सिखायेंगे। कैसे सिखायेंगे? एक बार एक घर में चोर घुस गया। घर वाले चिल्ला रहे थे कि घर में चोर आ गये। गाँव वाले, मोहल्ले वाले दौड़कर आ गये। कहाँ गया चोर? चोर ने देखा कि यह तो बड़ी संख्या आ गयी। अब क्या करना चाहिए? घर वाले चिल्ला रहे थे कि चोर को पकड़ो। चोर भी चिल्लाने लगा कि चोर को पकड़ो। देखो वह गया, इधर गया। भीड़ भागती रही और चोर भी उन्हीं के बीच भागता रहा और चिल्लाता रहा।

इसका क्या मतलब है? बेटे, जब घर का मालिक कहे कि चोर को पकड़ो, तब आप भी कहिए कि चोर को पकड़ो। चोर कौन है? मालूम नहीं कौन है? अनैतिकता को भगाओ, पाप को भगाओ, परन्तु भगायेगा कौन? दुनिया ने पाप को भगाया, पर वही चोर वाली बात सामने है। क्या करना पड़ेगा? हममें से जो भी आदमी इस मार्ग पर आयेगा, अपना चरित्र लेकर के आयेगा। लोक शिक्षण कैसे हो सकता है? चरित्र से। वाणी हो, चाहे न हो, आप गूँगे (मौन) हों, तो कोई हर्ज की बात नहीं। पाण्डिचेरी के अरविन्द घोष गूँगे (मौन) हो गये थे। उन्होंने जीभ से बोलना बन्द कर दिया था। महर्षि रमण गूँगे हो गये थे। उन्होंने भी बोलना बन्द कर दिया था? बिना बोले भी आप हवा को ठीक कर सकते हैं।

आपको बहुत बोलना आता है, पर आप हैं क्या? हमको यह बताइये? असल में प्रभाव आपके व्यक्तित्व का पड़ेगा। जिस काम के

लिए हम आपको भेजना चाहते हैं, वह आपका व्यक्तित्व और चरित्र करेगा और कोई चीज नहीं कर सकती। वेश्याएँ अपने जीवन में हजारों आदमियों को भड़ुवा बना देती हैं। शराबी अपने जीवन में सैकड़ों शराबी पैदा कर लेते हैं। जुआरी अपने जीवन में नौ सौ नये जुआरी पैदा कर लेते हैं। क्योंकि उनका चरित्र, उनका बोलना, उनका वचन और कर्म दोनों मिले हुए हैं और आप अपनी जिन्दगी में एक सन्त पैदा न कर सके, एक भला आदमी पैदा न कर सके। एक सज्जन पैदा न कर सके, एक राम-भक्त पैदा न कर सके। क्यों? इसलिए कि आपके चरित्र और आपकी वाणी में तालमेल नहीं है। आपका चरित्र अलग है और वाणी अलग है। तो कैसे असर पड़ेगा? नहीं साहब! असर पड़ेगा।

श्रेष्ठ तपस्वी बनाने होंगे

अगले दिनों क्या करना पड़ेगा? अगले दिनों परिव्राजक योजना का शुभारम्भ कर रहे हैं, जिसके लिए पहली बार आप आये हैं, जिसका आप श्रीगणेश कर रहे हैं। आपको श्री गणेश करने वालों में शामिल किया, सौभाग्य दिया गया। अगर यह योजना चलेगी, तो क्या होगा? भावी योजना के बारे में मैं आपको बता रहा हूँ कि इसमें हम यह प्रयत्न करेंगे कि आदमी को तपस्वी बनायें।

तपस्वी से क्या मतलब है? आदमी को धूप में खड़े करेंगे? धूप में नहीं खड़ा करेंगे। उसे अपनी हवस और अपनी कामनाओं पर अंकुश लगाना सिखायेंगे। तप इसी का नाम है। यही धूप में खड़ा होना है। आदमी अपने आप, अपनी शैतानी और अपनी कमजोरियों से लोहा ले। भीतर वाला कहता है कि हम तो यह करेंगे और बाहर वाला कहता है कि हम नहीं करने देंगे। इस तरह जो जद्दोजहद होती है और इस जद्दोजहद में जो लड़ाई लड़नी पड़ती है, उसी का नाम तप है। आपका व्यक्तित्व ऊँचा उठाने के लिए, आपकी जो बुरी आदतें पड़ी हुई हैं, उन बुरी आदतों को तोड़ने के लिए, बुरी आदतों का दमन करने के लिए,

आपके ऊपर जो अंकुश लगाने पड़ते हैं, उनकी रोकथाम करनी पड़ती है, उसी का नाम तप है।

नहीं साहब! तप करने से भगवान् प्रसन्न हो जाते हैं। बेटे, तप करने से भगवान् को क्या मिलता है? इससे भगवान् प्रसन्न नहीं हो जाता। केवल होता यह है कि तप करने से हमारी गन्दी आदतें छूटती हैं। बस जितनी गन्दी आदतें छूटती जायेंगी, उतना ही भगवान् प्रसन्न हो जायेगा। नहीं साहब! खाना नहीं खायेंगे, तो भगवान् प्रसन्न हो जायेगा। क्यों अगर तू खाना नहीं खायेगा, तो भगवान् को क्या मिलेगा? इसलिए क्या है बेटे कि जिस भावी तपस्वी जीवन की योजना को हम कार्यान्वित करने जा रहे हैं, वह हमारे रजत जयंती वर्ष[1] की सबसे शानदार योजना है। हम अपने इसी कुटुम्ब में से हजारों की तादाद में परिव्राजक निकालेंगे।

उनकी क्या विशेषता होगी? पहली विशेषता होगी उनका तपस्वी जीवन, जिसकी झाँकी हम कल करा चुके हैं। जिसके बारे में हमने कल केवल लोकाचार और मर्यादा वाला हिस्सा बताया था। दृष्टिकोण वाला हिस्सा, अन्तरंग वाला हिस्सा नहीं बताया था। आपको अपने भीतर वाले की किस तरीके से तोड़-फोड़ करनी पड़ेगी, यह स्थायी विषय की बात है और यह तब की बात है, जब आप हमारे पास रहेंगे। तब हम आपके भीतर वाले हिस्से को हथौड़े से तोड़कर फिर नया ढालेंगे।

वक्ता नहीं सलाहकार बनें

मित्रो! अभी तो हमने मर्यादा बतायी थी, शिष्टाचार बताया था, लोकाचार बताया था, पञ्चशील बताये थे। वह केवल मर्यादा थी, कानून थे, व्यवस्था थी। यह केवल कानून व्यवस्था के अन्तर्गत पाँच बातें

१- युगऋषि लोकमंगल के लिए तपस्वी साधकों की आवश्यकता पर बल देते रहे हैं। गायत्री तपोभूमि मथुरा की स्थापना सन् १९५३ में ऐसे ही लोकसेवी ढालने के लिए की गई थी। उसकी रजत जयंती १९७८ में मनाई गई। जिसके अन्तर्गत लोकसेवी परिव्राजकों के प्रशिक्षण का क्रम चालू किया गया था।

बतायी थीं। वह चरित्र संशोधन नहीं था। चरित्र संशोधन के लिए, यम-नियमों के लिए हम आपको दावत देंगे और कहेंगे कि आप आइये, हमारे साथ रहिए, हमारे वातावरण में रहिए। फिर क्या करेंगे? बेटे, हम आपको ज्ञान देंगे। कैसा ज्ञान देंगे? ऐसा, जिससे कि आप लोगों को सलाह दे सकने में समर्थ हो सकें। अभी आप लोगों को सलाह नहीं दे सकते। व्याख्यान तो कर सकते हैं, पर सलाह नहीं दे सकते; अभी जब आप सलाह देंगे तो गंदी सलाह देंगे, गलत सलाह देंगे। अभी आपका भीतर वाला हिस्सा जब किसी को सलाह देगा, तो कैसी सलाह देगा? जैसे आप हैं। आप बढ़िया सलाह नहीं दे सकते। क्योंकि सलाह के समय में आप स्टेज की बात भूल जायेंगे। स्टेज पर खड़े होकर बात कहना अलग है और सलाह की बात अलग है। हमको सलाह देने वाले चाहिए, सलाहकार चाहिए। हमको वक्ता नहीं चाहिए, सलाहकार चाहिए।

इसलिए क्या करना चाहिए? सलाह देने लायक आपकी अक्ल कैसे विकसित की जा सकती है? कौन-सी परिस्थितियों में क्या सलाह दी जा सकती है और किस तरह से दी जा सकती है? यह सारा का सारा शिक्षण ब्रह्मविद्या[1] कहलाता है। हम आपको अगले दिनों ब्रह्मविद्या भी सिखायेंगे और ब्रह्मविद्या सिखाने के साथ-साथ तपस्वी जीवन जीने तथा बाहर समाज के कार्य करने के लिए भेजेंगे। नहीं साहब! पहले भेज दीजिए। नहीं बेटे, पहले भेजने से तो मुसीबत आ जायेगी।

परिव्राजक बनें-स्तर सुधारें

इसलिए मित्रो! इस समय हम नया प्रयोग आरम्भ करते हैं, क्योंकि इस समय हमको बहुत जल्दी पड़ी हुई है। क्या जल्दी पड़ी हुई है?

१-ब्रह्म परमात्म सत्ता के साथ संगति बिठाने-सम्पर्क स्थापित करने की विद्या को ब्रह्मविद्या कहा जाता है। युग निर्माण योजना, मनुष्य और मनुष्यता को विसंगतियों से उबार कर उज्ज्वल भविष्य के मार्ग पर चला देने की योजना ही ईश्वरीय योजना है। उसमें सक्रिय भागीदारी का अर्थ भी भगवान् के साथ भागीदारी है। इसलिए इस दिव्य योजना में भागीदारी की कुशलता को ऋषि ने ब्रह्मविद्या कहा है।

जिस तरीके से जब युद्ध होता है, तो जवान आदमी मारे जाते हैं और स्कूलों से अठारह वर्ष से अधिक उम्र के सब बच्चे भर्ती कर लिए जाते हैं। उनको पन्द्रह-पन्द्रह दिन में निशाना लगाना सिखाकर मिलेट्री में भेज दिया जाता है कि जाइये दुश्मन का मुकाबला कीजिए। मोर्चे पर ऐसे ही भेज देते हैं। बेटे फिलहाल हम भी यही कर रहे हैं। आपका शिक्षण नहीं हुआ, आपको तपाया नहीं गया, आपको मजबूत नहीं बनाया गया, इसलिए आपको काम भी उसी स्तर का सौंपते हैं। नहीं साहब! कठिन काम सौंप दीजिए? नहीं बेटे, कठिन काम आप नहीं कर पायेंगे।

कठिन काम करने के लिए कुमारजीव[1] के तरीके से वहाँ भेज दें। कहाँ? चाइना, तो आप रोकर के भागेंगे। नहीं साहब! हमें नेता बना करके भेज दीजिए। नहीं बेटे, हम नेता बनाकर किसी को नहीं भेजते हैं। हम परिव्राजक भेजते हैं और भविष्य में हमारे प्रत्येक कार्यकर्त्ता को परिव्राजक होना पड़ेगा। हरेक को हम परिव्राजक बनायेंगे। मिलेट्री में जो व्यक्ति काम करते हैं, वे सभी 'मिलेट्रीमेन' होते हैं। उसमें जो इञ्जीनियर होता है, वह भी मिलेट्रीमेन होता है। हर आदमी को बन्दूक चलानी पड़ती है। हर आदमी को मिलेट्री के कपड़े पहनने पड़ते हैं। हर आदमी को लेफ्ट-राइट करना पड़ता है। आपमें से हर आदमी आज से परिव्राजक[2] है।

नहीं साहब! हम तो वक्ता हैं। आप वक्ता नहीं हैं। आप पहले परिव्राजक हैं। जरूरत पड़ी तो हम आपको वक्ता भी बना सकते हैं,

१- कुमारजीव एक प्राणवान् बौद्ध भिक्षु-परिव्राजक थे। उन्होंने उस समय दुर्गम हिमालय पार करके तिब्बत तथा चीन में बौद्ध मत का प्रचार किया था।
२-परिव्राजक का अर्थ होता है, किसी उच्च आदर्श के पूर्ति की सद्प्रवृत्तियों के विकास के लिए संकल्पपूर्वक जनसम्पर्क हेतु यात्रा करना। परिव्राजक प्रशिक्षण लेने वालों के लिए युगऋषि ने पहले चरण में कम से कम १५ दिन प्रव्रज्या के लिए निकलने का अनुशासन निर्धारित किया था।

लेकिन अगर जरूरत नहीं पड़ी तो आपको वही परिव्राजक की भूमिका निभानी पड़ेगी। बेटे, अगले दिनों के लिए हमारे लम्बे-चौड़े ख्वाब हैं। इस समय वर्तमान के काम बताइए? वर्तमान में तो छोटा-सा काम है। अभी फिलहाल हम आपको पन्द्रह-पन्द्रह दिनों के लिए छोटी सी ट्रेनिंग दे करके भेजते हैं, ताकि देखें कि आप कुछ करने की स्थिति में हैं कि नहीं? नहीं साहब! ज्यादा समय के लिए भेज दीजिए। ज्यादा समय के लिए नहीं भेजेंगे। ज्यादा समय के लिए भेजेंगे, तो तेरी पोल खुल जायेगी। पन्द्रह दिन तक तो अपनी भलमनसाहत को छिपाए भी रहेगा, लेकिन ज्यादा दिन रह गया, तो नंगा हो जायेगा और लोग तेरे बाल उखाड़ लेंगे। इसलिए पन्द्रह दिन के लिए ही भेजेंगे।

वहाँ क्या करना पड़ेगा? यही व्यावहारिक शिक्षण देने के लिए आपको पन्द्रह दिनों के लिए हम भेज रहे हैं, ताकि आप यह जान सकें कि आपको जनसम्पर्क कैसे करना चाहिए? बातचीत कैसी करनी चाहिए? लोगों के सामने कैसे विचार व्यक्त करना चाहिए? लोगों के ऊपर अपने चरित्र की छाप कैसे डालनी चाहिए? लोकसेवी को किस तरीके से बोलना चाहिए? लोकसेवी को किस तरीके से अपना आहार-विहार बनाना चाहिए? लोकसेवी को किस तरीके से अपनी मर्यादा का पालन करना चाहिए? लोकसेवी की दिनचर्या किस तरह की होनी चाहिए? अगर हम आपको बाहर न भेजें, तो यहाँ कैसे सिखा सकते हैं? यहाँ लोकसेवी थोड़े ही रहते हैं? यहाँ तो हम लोग ही रहते हैं, तो हमें क्या सिखायेंगे। बाहर वालों को सिखाने और सीखने के लिए आपको व्यावहारिक क्षेत्र में ही जाना पड़ेगा। पानी में घुसे बिना तैरना नहीं आ सकता। जनता में जाये बिना आप लोकशिक्षण की प्रक्रिया को नहीं सीख सकते। इसलिए आपको पन्द्रह दिन के लिए भेजते हैं।

वातावरण निर्माण हेतु महापुरश्चरण

गुरुजी! आप किस काम के लिए भेजते हैं? बेटे, इस समय एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। एक कार्य हमारा यह है कि इस वर्ष को, जिसको हमने रजत जयंती वर्ष कहा है। इसमें हमने एक महापुरश्चरण[1] आरम्भ किया है। महापुरश्चरण किस काम के लिए? महापुरश्चरण करने का उद्देश्य इस वातावरण को, एन्वायरनमेण्ट को परिष्कृत करना है। हवा, वातावरण अनुकूल न हो, तो हमारे प्रयास सफल नहीं हो पाते। अगर वर्षा के समय ठण्डक न हो, तो खेतों में जो बीज हम बोते हैं, वह सफल नहीं हो पाता। गर्मी में गेहूँ बो दें, तो यह सफल नहीं होगा। बरसात में अनाज बोएँ, तो सफल हो जायेगा।

बेटे! मौसम अनुकूल होगा, तो बात बन जायेगी। हवा अनुकूल होती है, तो नावें पीछे से आगे की ओर धकेलती जाती हैं। अगर हवा सामने की होती है, तो साइकिल को चलाते हैं तो पैर भी दुखते हैं और घण्टे भर में चार मील भर की चाल पकड़ती है। अगर पीछे वाली हवा हो, तब जरा-सा पैर मार दिया और साइकिल भागती हुई चली जाती है, पता भी नहीं चलता और खट पहुँच जाते हैं। मैं क्या बात कह रहा हूँ? वातावरण को अनुकूल बनाने के लिए जो काम हम करने वाले हैं, उसके लिए हम और आप प्रयत्न तो करेंगे ही, परिश्रम तो करेंगे ही, मेहनत तो करेंगे ही, लेकिन मानवीय प्रयत्न और मानवीय प्रयास की सीमा और मर्यादा है। इसके लिए आवश्यक है कि वातावरण होना चाहिए।

१- पुरश्चरण- पुरः चरण अर्थात् आगे कदम बढ़ाना, प्रगति का क्रम चलाना। किसी उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जब संकल्प पूर्व निश्चित साधना का अभियान चलाया जाता है, तो उसे पुरश्चरण कहते हैं। जब उसका क्षेत्र व्यापक हो, बड़ी जनशक्ति उसमें नियोजित हो, तो उसे महापुरश्चरण कहते हैं। रजत जयंती वर्ष में नवसृजन के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के संकल्प के साथ सामूहिक साधना सहित यज्ञों की योजना बनाई गई थी, उसे युगऋषि ने महापुश्चरण कहा था। उसके अन्तर्गत हजारों साधकों के सहयोग से २४ लाख, ५१ लाख, सवा करोड़ गायत्री मन्त्र जप के सहित सत्प्रवृत्ति संवर्धन हेतु यज्ञों का क्रम चलाया गया था।

मित्रो! वातावरण की शक्ति को यहाँ तो मैं नहीं बता सकता, लेकिन वातावरण की शक्ति के बारे में आपको जो अंक दिया है, उसमें हमने लिख दिया है। वातावरण को अनुकूल बनाने के लिए आध्यात्मिक प्रयासों का क्या महत्त्व हो सकता है, इसे अगले किसी व्याख्यान में बताऊँगा। अभी तो वातावरण को कैसे अनुकूल किया जाता है और जरूरत क्यों पड़ती है? इसे बताऊँगा। वातावरण को अनुकूल बनाने के लिए हमारे प्रयत्न भौतिक प्रयत्नों से कम नहीं, ज्यादा मूल्यवान् हैं। इन दिनों हम वातावरण को अनुकूल बनाने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। कैसा प्रयत्न कर रहे हैं? देख बेटे, पाण्डिचेरी के अरविन्द घोष बिलायत गये। बिलायत से पढ़ने के बाद उन्होंने कहा कि हम हिन्दुस्तान को आजादी दिलायेंगे।

पहले वे बड़ौदा वाले दीवान के यहाँ नौकरी करते रहे। राजाओं से संपर्क बनाया, और उनको संगठित करने की कोशिश की, कि इनको अंग्रेजों के खिलाफ खड़ा करें और हिन्दुस्तान को आजादी दिलायें। इसमें सफलता न मिली, तो कहाँ चले गये? वहाँ से वे कलकत्ता चले गये और वहाँ उन्होंने एक नेशनल कॉलेज खोला, ताकि नवयुवकों को शिक्षण दे सकें। शिक्षण दे करके उन्हें देश का कार्यकर्त्ता बनाएँ। नवयुवकों ने शिक्षा ग्रहण की और जब तक पढ़ते रहे, तब तक हाँ-हाँ करते रहे। बिना फीस जमा किए पढ़ भी लिए। लेकिन जब पढ़-लिखकर तैयार हुए, तो सब भाग गये। किसी ने कहा कि हमको नौकरी करनी है, तो किसी ने कहा कि हमको शादी करनी है। सब भाग गये, एक भी नहीं रहा।

श्री अरविन्द का तप—जन्मा एक चक्रवात

अरविन्द घोष को इससे बड़ी निराशा हुई कि इतना परिश्रम भी किया। इतना पैसा भी खर्च किया। इतनी उम्मीदें भी लगाईं और वे किसी काम भी नहीं आये। अन्ततः उन्होंने फिर से क्रान्तिकारी पार्टी बनायी। बम चलाने का सिस्टम बनाया। उनके बड़े भाई को फाँसी हो

गयी। उस जमाने के एक बहुत बड़े वकील ने अपनी वकालत के जरिए किसी तरीके से उन्हें फाँसी के तख्ते से बचा लिया था। बचाने के बाद अरविन्द घोष पाण्डिचेरी चले गये। पाण्डिचेरी में क्या करने लगे? वातावरण को अनुकूल बनाने के लिए उन्होंने तप प्रारम्भ कर दिया। तप करने से क्या हुआ? तप करने से बेटे उन्होंने हिन्दुस्तान के सारे वातावरण को इतना गरम कर दिया कि उस गर्मी में से ढेरों के ढेरों साइक्लोन पैदा होने लगे। साइक्लोन किसे कहते हैं? चक्रवात को। चक्रवात किसे कहते हैं।

बेटे! गर्मी के दिनों में गाँवों में धूल का अंधड़ आता है और गोल-गोल घूमता हुआ ऊपर को चला जाता है। अंग्रेजी में इसी को साइक्लोन (बवण्डर) कहते हैं। संस्कृत में चक्रवात कहते हैं। आप लोग क्या कहते हैं, मालूम नहीं है। हमारे यहाँ गाँवों में इसे भूत कहते हैं। इन भूतों में बड़ी ताकत होती है और वे छप्पर उखाड़कर फेंक देते हैं। पेड़ों को उखाड़ देते हैं। ऐसे ही इन्होंने वातावरण को इतना गरम कर दिया और इतने भूत पैदा कर दिये कि उन्होंने छप्पर फाड़ डाले और न जाने क्या से क्या कर दिया? हिन्दुस्तान की तवारीख (इतिहास) है कि जिन दिनों गाँधी जी पैदा हुए थे, उन दिनों इतने महापुरुष इस भारत भूमि में पैदा हुए कि जिसका मुकाबला नहीं हो सकता।

मित्रो! दुनिया में नेता तो बहुत हुए हैं, पर महापुरुष नहीं हुए। उस जमाने में नेता नहीं थे, महापुरुष थे। मालवीय जी राजनैतिक नेता नहीं थे, महापुरुष थे। गाँधी जी नेता नहीं थे, महापुरुष थे। और भी दूसरे बड़े आदमी-जैसे लोकमान्य तिलक नेता नहीं थे, महापुरुष थे। ऐसे-ऐसे कितने ही महापुरुष हुए थे, जिन्होंने हिन्दुस्तान का कायाकल्प कर दिया। भारत-भूमि के जनमानस को ऊँचा उठाने वाले, अंग्रेजों से लड़ने वाले इतने नेता बनकर तैयार हो गये। इसके लिए क्या करना पड़ा? उन्होंने एक काम किया था, तप किया था और तप से वातावरण को

गरम किया था। जब तक देश का वातावरण गरम रहा, तब तक महापुरुष पैदा होते रहे और बड़ा काम होता रहा। बेटे, अब तो अच्छी परिस्थितियाँ हैं, उस जमाने में तो कितनी रुकावटें थीं। अब तो कोई रुकावट भी नहीं है, लेकिन अब तप का गरम-सा वातावरण ठण्डा हो गया है। इसकी वजह से वे सब लोग, विशेषकर उस जमाने के लोग जो बढ़-चढ़ कर त्याग बलिदान करते थे। इनमें से कितने ही जिन्दा भी हैं। उनके बारे में आप रोज अखबारों में पढ़ते हैं।

मित्रो! जो हवा थी, वातावरण था, वह ठण्डा हो गया और दूसरी तरह की हवा आ गयी। हम उसी हवा को गरम करने का प्रयत्न कर रहे हैं और आप लोगों को भी उसी काम को करने के लिए लगा रहे हैं। युग निर्माण योजना के बहिरंग कार्यक्रम भी हमारे पास हैं, लेकिन बहिरंग कार्यक्रम का समय अभी नहीं है। अभी वातावरण को गरम करना आवश्यक है। वातावरण को गरम करने के लिए इस वर्ष हम एक महापुरश्चरण आरम्भ कर रहे हैं, जिसे खण्डों में बाँट दिया गया है।

एक पुरश्चरण हमने किया था चौबीस साल का। हमारा वह पुरश्चरण पूरा हो गया, जिसकी पूर्णाहुति के लिए हमने एक हजार कुण्ड का यज्ञ किया था। वह हमारा व्यक्तिगत प्रयत्न था। अब क्या कर रहे हैं? अब सारे के सारे विश्व के वातावरण को गरम करने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं और यह प्रयास कर रहे हैं कि इसमें आपको भी काम करने का मौका मिले। सावधानी यह रखनी है कि आप लोगों की नीयत और ईमान सही हो। आप लोग जिस क्षेत्र में काम करने के लिए जायें, उसमें पीठ पीछे मालूम पड़ना चाहिए कि हवा गरम हो रही है और आपको सहयोग मिलता जा रहा है। ऐसा वातावरण बनाने के लिए, जनमानस को पलटने के लिए हम एक गायत्री महापुरश्चरण आरम्भ कर रहे हैं।

यह महापुरश्चरण कैसा है? आप सबने अखबारों में पढ़ा होगा। तो क्या पच्चीस कुण्डीय यज्ञों के माध्यम से पुरश्चरण होगा? यज्ञ नहीं बेटे,

पुरश्चरण। यज्ञ और पुरश्चरण में क्या फर्क पड़ता है? बेटे, अब तक जो हमारे यज्ञ थे, वे प्रशिक्षण और प्रचार-दो उद्देश्यों के लिए होते थे। लोगों को भारतीय संस्कृति के माता-पिता की जानकारी कराने के लिए प्रशिक्षण और प्रचार के अब तक के यज्ञ होते रहे हैं। अब क्या है? अब सामर्थ्य वाले यज्ञ होंगे। अब आगे क्या करेंगे?

विज्ञान सम्मत अनुशासित यज्ञ

अब हमारे पास दो उद्देश्य हैं। एक तो यज्ञ की वैज्ञानिकता को सिद्ध करना है, जिसमें आप सिद्धि और चमत्कार ढूँढ़ते हैं। जिस सिद्धि और चमत्कार के लिए आप यज्ञ करते हैं, वह काफी नहीं हो सकता। उसके लिए विशेष चीजों की जरूरत होगी। समिधाएँ अलग चाहिए। समिधायें ही नहीं, वरन् व्यक्तियों ने किस पेड़ पर से कब, किस तरीके से उन्हें तोड़ा और उनके अन्दर कैसे संस्कार भर दिए। हवन के लिए जड़ी-बूटियाँ आप बाजार में से नहीं ला सकते। जिस तरह से आप यज्ञ के लिए किसी मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जल लाते हैं, उसी तरह जड़ी-बूटियाँ भी अभिमन्त्रित करके लानी पड़ती हैं। सामग्री भी मन्त्रित करके लानी पड़ेगी और जो आदमी हवन करने वाले होंगे, उनको भी संस्कारित करना पड़ेगा। उनको क्या करना पड़ेगा? इतने दिनों तक आपने उपवास किया है कि नहीं किया है, ब्रह्मचर्य रखते हैं कि नहीं। बेटे, वे सामर्थ्य वाले यज्ञ हैं, बरसात कराने वाले यज्ञ हैं, सन्तान देने वाले यज्ञ हैं, शान्ति देने वाले यज्ञ हैं। वे अलग होंगे। इसके लिए हम अलग प्रयत्न कर रहे हैं।

मित्रो! इसके लिए हमारा अलग शोध-संस्थान खड़ा हो रहा है। अभी तक हम क्या करते रहे? प्रचार के लिए, प्रशिक्षण के लिए यज्ञ करते रहे। दुकान पर से समिधाएँ ले आइये, टाल पर से ले आइये और दुकानदार से पूछना कि आम की हैं? अच्छा महाराज जी! आप की समिधा मिल जायेगी। बेटे! जिसकी दे, उसी की ले आना और चीर

फाड़कर हवन कर देना। तो फिर वह जो सामर्थ्य की बात थी, वह आयेगी? नहीं बेटे, इससे नहीं आयेगी। अब आप क्या कर रहे हैं? अब हम पुरश्चरण कर रहे हैं। इसे इस वर्ष से हमने प्रारम्भ कर दिया है। पुरश्चरण में जप, जप के साथ हवन अनिवार्य है। हवन के बिना जप पूरा नहीं होता। इस यज्ञ की अपनी मर्यादाएँ हैं, अनुशासन हैं।

पिछले यज्ञों में अब तक ऐसा नहीं था। उसमें क्या था? चलिये भाई साहब! यज्ञ में बैठ जाइये। नहीं साहब! हमारे काम में देर हो जायेगी। नहीं साहब! देखिए, एक पारी बीस मिनट में पूरी हो जाती है। इतने में क्या देर हो जायेगी? हवन से कुछ फायदा होता होगा, तो जरूर मिलेगा। बैठिए तो सही, २० मिनट ही सही। हाथ धोइये और हवन में बैठ जाइये। अच्छा साहब! सिगरेट के हाथ तो धो लूँ। हाँ, धो लीजिए। सिगरेट के हाथ से हवन मत कीजिए। मोजा पहनकर हवन में बैठ गये। क्यों साहब! यह मोजा कितने दिनों का धुला हुआ है? यह तो बहुत दिनों से धुला नहीं है। धोती भी धुली हुई नहीं है। अतः धुली हुई धोती पहनिए, अन्यथा हवन में नहीं बैठने देंगे। नहीं साहब! इसमें क्या फर्क पड़ता है? नहीं बेटे, अब हम इस तरह के यज्ञ नहीं करने देंगे।

मित्रो! इस साल के जो यज्ञ हैं, उनके साथ अब बहुत-सी मर्यादाएँ लगा देंगे। अभी तो हमने इसमें केवल यह मर्यादा लगायी है कि जो जप करेगा, उसे ही हवन करने देंगे। गायत्री महापुरश्चरण के ये जो हवन हैं, इनकी विशेषता यह है कि इनमें हवन होने तक के लिए नियमित रूप से जप करने का जो संकल्प करेंगे, केवल वही शामिल हो सकेंगे और कोई शामिल नहीं हो सकेगा। इसके लिए नियमित उपासना अनिवार्य है। यह इसकी रीढ़ है। हवन मुख्य नहीं है, सामग्री मुख्य नहीं है। यह पैसा प्रधान यज्ञ नहीं है। यह जन सहयोग के और श्रद्धा-संकलन के यज्ञ हैं। यदि आप श्रद्धा का संकलन कर सकते हैं, तो यज्ञ कर सकते हैं।

जिन्होंने श्रद्धा का संकलन नहीं किया, उपासक नहीं बनाये, तो आपका यज्ञ नहीं हो सकेगा। फिर आप यज्ञ को आगे बढ़ा लें। इसलिए यज्ञ का सारा नियंत्रण हमने अपने हाथ में लिया है। यह जीवन्त यज्ञ है। यह हमारा पुरश्चरण यज्ञ है। हमारे गुरुदेव ने हमको पुरश्चरण का संकल्प दिया था और अब हम आपके हाथ में पुरश्चरण का संकल्प देते हैं।

सामने हैं बड़े लक्ष्य

मित्रो! यह जो पुरश्चरण हो रहा है, उससे क्या फायदा होगा? पुरश्चरण से कई फायदे होंगे। एक फायदा तो अभी हमने आपको बताया है कि इससे वातावरण का संशोधन होगा। एक फायदा यह होगा कि हमारा गायत्री परिवार जो छोटा-सा था। अब हमारा मन है कि इस वर्ष हम लम्बी छलाँग लगायेंगे। इस वर्ष २४ लाख नये कार्यकर्त्ता बनाने का हमारा प्लान है। एक बार वे पकड़ में आ गये, तो भूत के तरीके से हम उनका पिण्ड छोड़ने वाले नहीं हैं।

हमारी बड़ी महत्वाकांक्षा है कि अब गायत्री माता को वेदमाता नहीं विश्वमाता होना चाहिए। पहले गायत्री वेदमाता थी, जब चारों वेद बने थे। फिर देवमाता हो गयी। इस भारत भूमि का प्रत्येक नागरिक जनेऊ पहनने के समय पर गायत्री मन्त्र लेता था। उसके बाद उसके चरित्र में ऐसा सुन्दर निखार आता था कि प्रत्येक आदमी देवता कहलाता था। इस भारत के निवासी तैंतीस कोटि देवता कहलाते थे। तब गायत्री देवमाता थी। अब क्या होने जा रहा है? अब बेटे प्रज्ञावतार होने जा रहा है।

प्रज्ञावतार क्या है? कभी बताऊँगा, पर आज मैं कहता हूँ कि अब गायत्री माता विश्वमाता होने वाली है। भविष्यवाणी तो मैं नहीं करता, परन्तु मेरा अपना विश्वास है कि इसके लिए २२ साल काफी होने चाहिए। यह सन् १९७८ है। २२ वर्ष बाद सन् २००० आने वाला है। सन् २००० तक हम यह छलाँग मारेंगे और इसको विश्वमाता बनाने में सफल होंगे। गायत्रीमाता विश्वमाता बनेगी। फिर बीस-बाइस वर्ष और लगेंगे

स्थूल जगत् में सतयुगी परिवर्तन आने हेतु। अतः अभी इन्तजार तो करना ही होगा। बीज २००० तक पड़ जायेंगे।

मित्रो! नया युग, जो आने वाला है; नया संसार, जो आने वाला है; नया समाज जो आने वाला है; नया मनुष्य जो, आने वाला है और उसके भीतर जो देवत्व का उदय होने वाला है और धरती पर स्वर्ग का अवतरण होने वाला है। इसके लिए सारे विश्व में गायत्री का आलोक, सविता का आलोक फैलने वाला है। हिन्दुस्तान में ? केवल हिन्दुस्तान में नहीं, वरन् सारे विश्व में, ब्राह्मण में ही नहीं, वरन् पूरे मानव समाज में, जिसमें मुसलमान भी शामिल हैं, ईसाई भी शामिल हैं, सबमें गायत्री का प्रकाश फैलने वाला है। तो आप सबको गायत्री पढ़ायेंगे? हाँ बेटे, सबको पढ़ायेंगे। सूरज सबका है, चन्द्रमा सबका है। गंगा सबकी है, हवा सबकी है। इसी तरह गायत्री भी सबकी है। गायत्री का जाति-बिरादरी से कोई ताल्लुक नहीं है। वह वेदमाता है, देवमाता है और विश्वमाता है।

अगले दिनों इसको विश्वमाता तक पहुँचाने में हमारे जो पुरश्चरण हैं और इनमें जो सामर्थ्य है, उससे हम जनमानस को जाग्रत् करेंगे। निष्ठावानों की संख्या बढ़ायेंगे। वातावरण को गरम करेंगे। गायत्री यज्ञों के माध्यम से हम लोकशिक्षण करेंगे। गायत्री के माध्यम से हम लोगों को नयी विचारणाएँ देंगे। गायत्री मन्त्र के चौबीस अक्षरों की हम व्याख्या करेंगे और मनुष्य जीवन से सम्बन्धित, पारिवारिक जीवन, शारीरिक जीवन, मानसिक जीवन, भौतिक जीवन, हर तरह का जीवन-शिक्षण

---

१ व २- युगऋषि ने सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए एक बड़ी सामाजिक क्रान्ति की आवश्यकता बतलाई है। उस क्रान्ति के लिए विचार क्रान्ति तथा नैतिक क्रान्ति के आधार सबल बनाने होंगे। विचारों का परिष्कार ही विचार क्रान्ति है। इसके लिए गायत्री विद्या के प्रयोग की बात कही गई है। कर्म में शालीनता का समावेश, कर्म परिष्कार के लिए यज्ञ विज्ञान का सहारा लेने की बात कही गई है। इन दोनों के सुसंयोग से ही सांस्कृतिक क्रान्ति, संस्कृति की सीता की वापसी का लक्ष्य सिद्ध होगा।

करेंगे। गायत्री में विचारणाओं का शिक्षण करने की पूरी-पूरी गुंजायश है। और क्या करेंगे? अगले दिनों यज्ञ का शिक्षण करेंगे। लोकशिक्षण के दो आधार हैं। पहला है विचारों का परिष्कार[१] और दूसरा है कर्म में शालीनता[२]। व्यक्ति के जीवन में शालीनता, सज्जनता और शराफत, सामाजिक जीवन में श्रेष्ठ परम्पराएँ अर्थात् जीवन को श्रेष्ठ बनाना और समाज को परिष्कृत करना। विचार ऊँचे करना और कर्म को, चरित्र को अच्छा करना, यही प्रमुख लोकशिक्षण है, जिसे हम गायत्री और यज्ञ के माध्यम से करेंगे।

आपको करना क्या है? आपके जिम्मे जो काम सुपुर्द किये गये हैं, वे वास्तविक परिव्राजक के काम सुपुर्द किये गये हैं? आपको परिव्राजक की वास्तविक भूमिका निभानी है, इससे कम में काम नहीं चलेगा। परिव्राजक की योजना को पूरा करने के लिए, परिव्राजक के उत्तरदायित्वों और कर्त्तव्यों को निभाने के लिए वही काम करना पड़ेगा, कि आप अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को कम कर दें और सामान्य जीवन-यापन करने से सन्तोष कर लें। सन्तोष करने के बाद में यह देखें कि हमारे पास कितना ज्यादा समय है? उस समय का सदुपयोग कहीं भी आप कर सकते हैं। वास्तव में परिव्राजक एक संकल्प है, एक व्रत है, एक नियम है, एक उपासना है, जिसमें श्रेष्ठ प्रकाश देने के लिए सम्पर्क स्थापित करना पड़ता है। सम्पर्क स्थापित कीजिए, अपने घर-परिवार वालों से, अपने बच्चों से, अपने पड़ोसी और मोहल्ले वालों से। जिस दफ्तर में आप काम करते हैं, वहाँ लोगों से अच्छे उद्देश्यों के लिए सम्पर्क स्थापित कीजिए। आप वहाँ भी परिव्रज्या कर सकते हैं। आप दुकानदार हैं, तो वहाँ भी सबेरे से शाम तक ५० आदमी आते हैं। दुकानदारी के साथ-साथ श्रेष्ठ कामों के लिए भी आप उतना समय निकाल सकते हैं। आप हर आदमी को २४ घण्टे अच्छी सलाह दे सकते हैं। श्रेष्ठ प्रेरणाएँ दे सकते हैं और सामान्य जीवनक्रम के साथ

परिव्राजक व्रत का, जिसका उद्देश्य जन-सम्पर्क है, हर समय पालन करते रह सकते हैं। आप कहीं भी जाएँ, हम आपसे नहीं पूछेंगे कि इनमें कितनी सफलता मिली? सफलता मिले या न मिले, पर प्रयास कितना किया, यह समयदानियों से हमारा मूल प्रश्न रहेगा।

आप परिव्राजक हैं। जन-सम्पर्क में आप जहाँ कहीं भी जाएँ, आप कृपा करके एक ही बात कहना कि हर आदमी से जो कोई भी आपको भजन करता हुआ, पूजा करता हुआ दिखाई दे, उससे यही कहना कि अगर आप भगवान् का अनुग्रह पाने के इच्छुक हों, भगवान् की सहायता करने के इच्छुक हों, तो गुरुजी ने पल्ला पसार करके, महाकाल ने पल्ला पसार करके, युग के देवता ने पल्ला पसार करके हर आदमी से समय माँगा है। आपके पास समय हो, तो हमें दें। नवयुग के निर्माण के लिए राहत कार्यों के लिए पीड़ा और पतन से लोहा लेने के लिए, सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धन में योगदान देने के लिये और दुष्प्रवृत्तियों से संघर्ष करने के लिये। दोनों हाथ से इस आपत्तिकाल में भगवान् ने पुकार की है। अगर आप कर सकते हों, तो यहाँ से जाने के पश्चात् करना। समय देना केवल उनके लिए सम्भव हो सकता है। जो अपनी भौतिक महत्त्वाकांक्षाओं पर नियंत्रण लगा सकते हैं। इसके अलावा कोई समय नहीं दे सकता। मित्रो! मैंने अपनी बातें कह दी। आज की बात समाप्त।

गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) 249411
फोन-01334-260602, 260403 फैक्स-260866
Email- shantikunj@awgp.org; www.awgp.org